वन्दे मात्रम

तरानये भारत

प्रकाशक

नेशनल [जनरल]

बुकडिपो

नईसड़क देहली।

भारत का दूध पीकर भारत की शान रखना।
हो भारती कहाते कुछ इस का मान रखना॥

वन्देमातरम्

तरान-ये-भारत

भारत के राष्ट्रीय कवियों की
देशभक्ति पूर्ण तथा जोशीली
कविताओं का संग्रह।

प्रकाशक
नेशनल [जनरल] बुक डिपो
नई सड़क देहली॥

मास्टर लक्ष्मण के प्रबन्ध से
स्टार प्रेस देहली में मुद्रित।

प्रथमबार १००० मूल्य ।-)

सूची-पत्र।

वन्दे मातरम्।

तरानये-भारत।

प्रार्थना

या रब रहें सलामत यह रहनुमा हमारे।
आजादी के अर्श के जो चमकते सितारे।
भारत में दम है बाकी जिनके दमो कदम से
बिन नाखुदा लगायें इस नाव को किनारे।
है मादरे वतन का सीने में दर्द जिन के।
इस के लिये जिन्हो ने लाखों ही दुख सहारे।
जो जेल को समझते हैं मन्दरो मसजिद।
और अन्डेमन को काशी वो काबा के मीनारे।
फांसी मिले तो समझें यह है हयात अबदी।
बलिदान से कटेंगे भारत के कष्ट सारे।
अहले वतन की खिदमत को समझा हज्ज अकबर।
गंगा स्नान यह है दुख औरों के निवारे।
भारत के वास्ते है मरना वो जीना जिनका।
सोजे वतन के उठते है जिगर में शरारे।

भारत में इनका दम है यशवत सिंह गनीमत।
जिन्दा रहें अबदतक यह कौम के प्यारे।

वन्देमात्रम्

ऐ मादरे हिन्दुस्तां कहता हूं वन्दे मात्रम्।
खादिम हू तेरा बेगुमा कहता हू वन्देमात्रम।
कहता हू वन्दे मात्रम् कहता हूं वन्देमात्रम्
अल्लाह अकबर नारये तौहीद लब पर है मेरे।
और तेरी अजमत का निशा कहता हू वन्देमात्रम्।
कहता हूं वन्देमात्रम कहता हू वन्दे मात्र म्।
हिन्दूकी जय मुसलिमकीजय सिक्खोंकी जयदायमरहे
भारत की जय भी हो अयां कहता हू वन्दे मात्रम्।
कहता हू वन्दे मात्रम् कहता ह वन्देमात्रम्।
खिदमत पे बाधोहै कमर बेजाहै सब लौको खतर।
जायि अगर जाती है जा कहता हू वन्देमात्रम्।
कहता हू वन्देमात्रम् कहता हू वन्देमात्रम्।
आफात की आंधी चले बारिश मसायब की रहे।
बिगडे जमीनो आसमां कहता ह वन्देमात्रम्।
कहता ह वन्देमात्रम् कहता हू वन्दे मात्रम्।
उठें बगूले कहर के और राद भी कडका करे।
चलती रहेगी यह जबां कहता हूं वन्देमात्रम्।

खञर बकफ दुश्मन गो सर पे मेरे हों खडा ।
निकलेगा मेरे मुंह सेवां कहता हू वन्देमात्रम ।
कहता हूं वन्देमात्रम् कहता हू वन्देमात्रम् ।
हा तीर बम हो जेश हो परोप्लेन या गैस हो ।
फायर हो डायर का अया कहता हू वन्देमात्रम् ।
कहता हू वन्दे मात्रम् कहता वन्दे मात्रम् ।
सरकार गैजोगजब से जन्दा में मुझ को भेजदे ।
फिर भी रहे वर्दे जबा कहता हू वन्देमात्रम् ।
कहता हू वन्दे मात्रम् कहता हू वन्दे मात्रम ।
हाथों में होवे हथकड़ी पावों में वेडा हा पडो ।
कलमा जबा पे हा रवा कहता हू वन्दे मात्रम् ।
कहता हू बन्दे मात्रम् कहता हूँ वन्दे मात्रम् ।

भारत का दूध पीकर भारत की शान रखना

भारत का दूध पीकर भारत की शान रखना ।
हो भारती कहाते कुछ इस का मान रखना ।
भारत सपूत बनकर मय्या का दुख मिटाओ ।
आपत्तिये जो आयें सीना सिपर बनाओ ।
हम क्या थे, क्या हुये हैं, अब और क्या है होना?
सर्वस्व खो चुके हैं, अब क्या रहा है खोना
ऊंचे शिखर पर चढ़के कैसे गिरे है नीचे ।

कोई अपूर्व शक्ती हम को भले ही सी चे ।
क्या बूढ़ा बैल भारत दल दल में फंस रहा है ।
ऐसी गिरी दशा पर संसार हंस रही है ।
भालू यो शेर दोनों मु ह फाड यां खडे हैं ।
भगवान अब उमारो तेरी शरण पडे हैं ।
कल फिरते थे जो नन्गे, हब्शी हमें बताते ।
मूरख समझ के हमको क्या क्या हैं रंग लाते ।
घुरकी हमें बताते धमकी हमें दिखाते ।
कहते है, "बैल करो तुम जो कुछ है हम बताते" ।
यह दुखी दशा हमारी अ ेम ने बनाई ।
थोथे घमंड होने अड अपनी ही कटाई ।
कांटे का नाम तक भी भारत न जानता था ।
सेवा सभी की करना कर्तव्य मानता था ।
सब की भलाई चाही सब का भरा खजाना ।
आये दुखों को इसने अपने से बढ़के जाना ।
इसकी शरण जो आया सर पर उसे चढ़ाया ।
यह पोच हम को समझा इतना उसे बढ़ाया ।
बातों में पालिसी को देखो कभी न जाना ।
दिखलायें लाख लालच पर उस तरफ न जाना ।
जब तक न दुख सहोगे हरगिज न सुख मिलेगा ।
परिणाम दुखका सुख है दुख ही से सुख मिलेगा ।

आगे क़दम जो रखना पीछे न फिर हटाना।
ईश्वर सहाय होगा, हिम्मत न फिर हटाना॥

मादरे हिन्द की है आंख का तारा गांधी

हम हैं गांधी के मिया और है हमारा गांधी।
शान करतार का बेशक है नजारा गांधी।
देवता फर्श पर कुदरत ने उतारा गांधी।
जानो दिल से हमें क्यों न हो प्यारा गांधी।
मादरे हिन्द की है आंख का तारा गांधी॥
मालवी जे व है गुलशन की तो नहरूज़ीनत।
था तिलक बादे बाहरी तो ज़फर है निगहत।
मोतिया किचलु अगर है तो गेंदा मजहरुल।
है मोहम्मद अली नरगिस तो गुलाब है शौकत।
गुलशने हिन्द में है फूल हमारा गांधी॥
न तहय्या किया पहिले कभी हैरानी का।
न ख्याल आया तबीयत में परेशानी का।
बस मशकूर हूं मैं तेरी मेहरबानी का।
अब तो कुछ गम नहीं इस बहरे की तुगयानीका।
डूबतीनाव का है जब कि सहारा गांधी॥

वतन का राग

सभी हिन्द की कुत्बे में अर्श आला है।

यह होम रूल की उम्मीद का उजाला है।
'बड़े बड़ों ने ही इस आर्जू को पाला है।
फकीर कौम के हैं और यह राग माला है।
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले
न लें बहिश्त भी हम होम रूल के बदले॥
वतन परस्त शहीदों की खाक लायेंगे।
हम अपनी आंख का सुरमा उसे बनायेंगे।
गरीब मां के लिये दर्द दुख उठायेंगे।
यही प्याम वफा कौम को सुनायेंगे।
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले।
न लें बहिश्ते भी हम होम रूल के बदले॥
हमारे वास्ते जन्जीर व तौक गहना है।
वफा के शौक में गांधी ने जिस को पहिना है
समझ लिया कि हमें रन्ज औ दर्द सहना है।
मगर जबां से कहेंगे वही जो कहना है।
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूल के बदले॥
पहिनाने वाले अगर बेड़ियां पहिनायेंगे।
खुशी से कैद के गोशे को हम बसायेंगे॥
जो सन्त्री दरे जन्दां के सो भी जायगे।
यह राग गाके उन्हें नींद से जगायेंगे

तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले ।
न लें बहिश्त भी हम होम रूल के बदले ॥
जबां को बन्द किया है यह गाफिलों को है नाज ।
जरा रगों में भी लहूका देखलें अन्दाज ।
रहेगा जान के हमराह दिलका सोज़ो गुदाज़ ।
चिता से आयेगी मरने के बाद यह आवाज़ ।
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले ।
न लें बहिश्त भी हम होम रूल के बदले ॥
यही दुआ है वतन की शिकस्ता निहालों की ।
यही उमेद है जवानों के नो निहालों की ।
जो रहनुमा है मोहब्बत पे मिटने वालों की ।
हमें कसम है उसी के सपेद बालों की ।
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले ।
न लें बहिश्त भी हम होम रूल के बदले ॥
यही प्याम है कोयल का बाग के अन्दर ।
इसी हवा में है गंगा का ज़ोर आठ पहर ।
हिलाल ईद ने दी है यही दिलों को खबर ।
पुकारता है हिमालय से अब्र उठ उठ कर ।
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले ।
न लें बहिश्त भी हम होम रूल के बदले ॥
बसे हुये हैं मोहब्बत से जिनकी कौम के घर ।

वतन का पास है उनको सोहाग से बढ़कर।
जो शेर क्सार हैं हिन्दुस्तान के लख्ते जिगर।
यह माँ के दूध से लिखा है उनके सीने पर।
तलब फ़ज़ूल है काँटे की फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम होम रूल के बदले

हम होंगे ऐशहोगा और होमरूलहोगा

अहले वतन मुबारक तुम का यह यज्म आला।
जिस में नई उम्मीदों का है नया उजाला।
दुनिया के मज़हबों से यह रंग है नराला।
मसजिद यही है अपनी और है यही शिवाला।
हो होम रूल हासिल अरमान है तो यह है।
अब दीन है तो यह है ईमान है तो यह है।
शैदाये बोस्तां का सरवे चमन मुबारक।
रंगीन तबीयतों को रगे सँखुन मुबारक।
बुल बुल को गुल मुबारक गुल को चमन मुबारक।
हम बेकसों को अपना प्यारा वतन मुबारक।
गुन्चे हमारे दिल के इस बाग़ में खिलेंगे।
इस खाक से उठे हैं इस खाक में मिलेंगे।
इस खाक दिल नशीं पर बादेखसा छारहा है।
तूफ़ान बेकसी का हम को सता रहा है॥

लेकिन यह दौरे हसरत दुनिया से आरहा है।
मायूस हो न जाना वह दिन भी आरहा है।
बरतानिया का साया सर पर कबूल होगा।
हम होंगे पेश होगा और होम रूल होगा।

कार जार हस्ती

अरजो समा में नूरके साचे में ढल गये।
सो के उठो कि गैर हैं आगे निकल गये॥
बार आइना हरीफ पहिन कर संभल गये।
शेरों के रजम गाह में तेवर बदल गये॥
तुम भी दिखावो जौहर पैकार रजम में।
मर्दाना वार बढ़के करो वार रजम में॥
लश्कर कशी के सफ में तुम्हारा है इन्तजार।
सीना सिपर हो बढ़के कि है वक्त कारजार॥
मैदान के धनी हो, जवानो हो होनहार।
आगे तुम्हारे किसको है दावा गीरोदार
सोकर उठो कि काफले वाले निकल गये।
आगे बहुत से हैं तुम से रिसाले निकल गये॥
उठकर जरा जमाने की देखो रविश है क्या।
कौमों में जहो जहद की दावो दहिश है क्य
आयन्दा वो गुजश्ता दिल में खलिश है क्या।
छोड़ो ब्यास काम कि यह कशमकश है क्या॥

करलो वह आज जो तुम्हें करना है दोस्तो ।
डूबी हुई है कौम उभरना है दोस्तो ॥
उठ कर हवाई किला मसख़र करो कोई ।
दुश्मन पे वार रज़म में बढ़कर करो कोई ॥
मैदान कारज़ार है यह सर करो कोई ।
कौमी निशां बलन्द फलक पर करो कोई ॥
उठो कि कल का देख रहे हो यह ख्वाब क्या ।
गफ़लत की है पड़ी हुई मुंह पर निकाब क्या ॥
दुनिया की रज़मगाह है शोहरत का कारज़ार ।
अफ़सानये अकाबर आलम है यादगार ॥
हिम्मत करो बलन्द कि हो इज्ज़तो वकार ।
कोशिश करो कि कल का है क्या ख्वाफ़ ऐतबार ॥
ऊंचा हवा में मर-से फरेरा उड़ा करे ।
ताऊस बन के कौम का झन्डा उड़ा करे ॥
आलात हर्ब आज तुम्हारे हैं तुन्दो तेज़ ।
और गर्म जहद वो जद का है हगामये सतेज़ ॥
रन में बढ़ो, बढ़ो, कि नहीं मौकये गरेज़ ।
कल तुम कहां हो और यह कहां तेग़ शोला रेज़ ।
यह दौरे अमन है, यह तरक्की का दौर है ।
दुनिया का रंग और था पहिले अब और है ।
गुज़रे हुये ज़माने के छोड़ो ख्याल को ।

तोड़ो तिलिस्म बाद निशातो मलालको ॥
चमकावो आस्मांपे कौमी हिलाल को।
हल्के कोहन पहिनावो न लैलाये हाल को ॥
अहदे कोहन का दफ़नरे पारीना मुर्दा है।
तलवार फेंक भी दो कि यह जंग खुरदा है ॥
यह शाह राहे वक्त में ये अख्त्यार क्या।
तुम पीछे फिर के देखते हो बार बार क्या ॥
सोकर उठोगे ख्वाब से रोज़े शुमार क्या।
नींदों का उतरेगा न तुम्हारे खुमार क्या ॥
चौंको शिताब अब नहीं मौका दरेग का।
सीखो सबक जवानो ! शरीफाना जंग का ॥
दिन चढ़ गया है ख्वाब गरां से,उठो ! उठो !
आवाज़ आरही है बिगुल की सुनो सुनो !
लो आगया गनीम वह सर पर बढ़ो ! बढ़ो।
दुश्मन लगा रहा है निशाना बचो ! बचो !
हथियार जल्द तेज करो वक्ते कार है।
हस्ती का गर्म मारकःये कार जार है ॥
जब शाम उमर होगई सोकर उठे तो क्या।
कौमी वकार हाथ से खोकर उठे तो क्या ॥
लुटिया हमें अखीर डुबोकर,उठे तो क्या।

बिस्तर से शर्मसार होकर उठे तो क्या ॥
जब आगया ग़नीम अजल सिरपे फायदा ।
खोली जो आंख शेब में बस्तर में फायदा ?

खुदाया कैसी मुसीबतोंमें यह हिन्द वाले पड़े हुये हैं।

खुदाया कैसी मुसीबतों में यह हिन्द वाले पडे हुये हैं।
सितमगरों की जफाये बेहद से दिल पे छाले पडे हुये हैं॥
चला किसीपे दगाका नश्तर चला किसीपे जफाका खन्जर
दिलो जिगर पर इलाही कैसे सितम के भाले पड़े हुये हैं॥
कई हैं बेकस निकाल डाले कई हुये हैं जेलके हवाले।
ग़रीब मज़लूम बेकसों के घरों पे ताले पडे हुये हैं॥
किसीने अपनी जो दादचाही तो इससे उसपर पड़ी तबाही।
अजब मुसीबत का सामना है सितम के पाले पड़े हुये हैं॥
न हश्र तक भी यह पाक होंगे रहेंगे नापाक ख़ाक होंगे।
खलीफतुल वक्त की तरफ से जो कल्ब काले पड़े हुये हैं॥
करो खिलाफत में आके नालिश ज़रूरहोगी तुम्हारी पुरसिश।
यहां के हुक्काम को तो जीने के लाले पडे हुये हैं॥
हुजूर हालत से बेखबर हैं इसी सबब से यह सब निडर हैं।
शरीफों की इज्जतों के पीछे यह बाग वाले पडे हुये हैं॥
तुम्ही से यारब है दाद ख्वाही तुही मिटायेगा यह सबाही।

बुरी तरह से हमारे पीछे यह ज़ुलमवाले पड़े हुये हैं ॥
फुग़ां करे क्या कोई ज़बां से जो कुछ कहा तो गया ज़हां से।
है जिनको अपना ख्याल इज्ज़त वह सरको डाले पड़े हुये हैं॥

हम क्या हैं ?

उदू है जिस चमन का बाग़बां भी वह चमन हम हैं।
मुख़ालिफ जिनके हैं अहले वफ़ा वह वे वतन हम हैं॥
कहां जायें हमारी जान का बचना है अब मुश्किल।
शिकारी की निगाहों में ही वह काले हिरन हम हैं॥
ब जाहिर पिस चुके हैं गरदशे दौरां के हाथोंसे।
मगर बातिन में फिर भी ज़ेब बज्मो अन्जमन हम हैं।
उठायें याद मरने के किसी का बारे अहसां क्यूं ?
अभी से इस लिये बांधे हुये सरसे कफन हम हैं।
कोई हम को अगर देखे तो इबरत की निगाहों से।
जो मिट जाता है लहजा भर ही में वह बांकपन हम हैं।
सरे तसलीम खम रहता है हसरत अच्छे अच्छों का।
फकीरी में भी रखते इस गजब का बांक पन हम हैं।

आप अपनी गफ़लतों का हम निशाना होगये

क्या कहें हम तुम से क्या थे और अब क्या होगये।
चश्म इबरत के लिये गोया तमाशा होगये ॥

हूं वह तसवीर हैं हम इन्कलाबे दहर की।
होके मशहूरे जहां रुसवाये दुनिया होगये॥
है हमारी जात में मख्फी जहां का जज्बो मद्द।
बन के बिगड़े और बिगड़ कर नक्शे दरिया होगये॥
था कभी रहती थीं हम से आरजूयें दूर दूर।
था सरापा आज तस्वीरे तमन्ना होगये॥
हम वह गुल हैं जो कि बादे रश्क से मुरझा गया।
जो कि खटका चश्म हासिद में वह कांटा होगये,
क्यों निकाले जारहे हैं मस्कने इसलाम से।
हम भी क्या अगयार के दिल की तमन्ना होगये।
ख्वाब गफलत से उठे कब रहबराने कौमो मुल्क।
मिटते मिटते जब कि हम नक्शे कफेपा होगये॥
हम हैं और महेमुकाबिल कितना हाय हसू रोज।
जिस कदर यह मिट गये उतने ही पैदा होगये॥
गैर के जुल्मो सितम का है गिला नश्तर अबस।
आप अपनी गलफतों का हम निशाना होगये॥

न देखा जायगा गुलशन में अब दौरे खिजाँ हम से

न पूछ ऐ सूफी खस्ता हमारी दास्तां हमसे।
यह दिन याद आते हैं हमको कि डरता था जहां हमसे॥

हमारी दोस्ती का दम जमाना था जो भरता था।
वही हम हैं मुखालिफ होगया सारा जहां हमसे ॥
उसूलों से हमारे अहले दुनिया दर्स लेतेथे।
जहां में अदलो हरियत का कायम था निशां हम से ॥
वही हम हैं कि अपने हाल पर अब आप रोते हैं।
नहीं होता किसी सूरत भी अब अर्से फुगां हमसे ॥
भुलाया अपने दिल से सीरते इखलाफ को हमने।
शिकायत क्या जो बर गश्ता हुआ है आसमां हमसे ॥
भला हो अहले मगरिब का भलाहो अहले योरुप का।
जगाया हमको गफलत से जो होकर बदगुमां हमसे ॥
कभी मुरझाने देंगे हम न अब शाखे मुराद अपनी।
न देखा जायेगा गुलशन में अब दौर खिजां हम से ॥

स्वदेशी गीत

यारब मुझे लगादे ऐसी लगन स्वदेशी।
हो मेरा मन स्वदेशी हो मेरा तन स्वदेशी ॥
जाहिर स्वदेशी मेरे हर काल फैल से हो।
आये नजर हर एक को मेरा चलन स्वदेशी ॥
हों बाग हिन्द में फिर पैदा वह गुल वह बूटे।
इस बाग को बनादें जो इक चमन स्वदेशी ॥
खद्दर के पैरहन हों गाढेकी पगड़ियां हों।
गालिब मशीनरी पर आजाये फन स्वदेशी ॥

पहिनूंगा जीतेजी अब मैं प गुवार खद्दर।
हां बाद मर्ग भी हो मेरा कफन स्वदेशी॥

जज़बये दिल

यारब हमारे सरमें भर दे हवाय कौमी।
अक्से सदाय कुन हो दर्दे निदाय कौमी॥
जो दर्द में मजा है हम दर्द जानते हैं।
यह दर्द आन जोदिल है मुश्किल कुशाये कौमी॥
शाहों को यह गदाई कब है नसीब होती।
सर ताज है जहां का जो है गदाय कौमी॥
हम एक ही लडी के मोती बने हुये हैं।
जुल्ले खुदा है अपने सर पर रवाय कौमी॥
मुफ्ती नहीं हैं लेकिन फतवा तलब हुआ है।
हर एक बच्चा २ अब शेर गाये कौमी॥
बिसमिल की यह दुआ है आबाद हो जमाना।
आंखों मे दिल में हर एक बसती बसाय कौमी॥
यह इजिज से दुआ है यारब कबूल कर ले।
आबाद हो हमेशा दौलत सराय कौमी॥
यारब हमें दिखादे सूरत तरक्कियों की।
सर पर हमारे बैठे आकर हुमाय कौमी॥

इत्तिफाक का बरकत

एक रोज एक का हिन्दसा करने लगा बड़ाई।

दस ने कहा कि क्यों है मगरूर इतना भाई ॥
मी तो हुं सिफर को पहलु में हू बिठाता ।
गोया सिफर के दमसे रोशन हुई खोदाई ॥
यू देख गो सिफर की मिकदार कुछ नहीं है ।
फिर भी तु दाने इसकी यह कद्र है बढ़ाई ॥
हिन्द सा यह दस गुना है मिलकर जो पास बैठे
दम भाइयों में इसने इज्जत मेरा बढाई ॥
दूने कहा ये मुफरद हिन्दसों में मैं बडा हू ।
छोटा हे एक लेकिन की इसने जग हसाई ॥
दो एक पास बैठें होजायें वह ग्यारह ।
मिलबैठने में देखी हरएक की बडाई ॥

नतीजा

करते हं जो तवाज़ा उन का बडा है रुतवा ।
जिस तरह कि सिफर से एक को मिली बडाई ॥
पहलू में जब बडों ने छोटों को है बिठाय ।
तनहा बडोंसे उनको इज्जत है हाथ आई ॥
सब इत्तिफाक के हैं आलम में यह किरिश्मे ।
उम्मी लकूष ने उसकी ताजीम है सिखाई ॥

नग़मये इत्तिहाद

बेसूद तफ़र्रुक़े हैं फिर शेख़ो ब्राम्हणके ।
बेटे हैं । सच्चे दिल हैं हम मादरे वतन के ।

मिलकर रहें न क्यों कर सब उज्व इक बदन के॥
परदा उठे दुई का है आबरू इसी में।
अपने करगे हासिल क्या खाक गे़र बन के॥
छोड़ो हसद में जलना उलफत की लौ लगावो।
हम हैं चिराग़ रोशन सब एक अन्जुमन के॥
यह रिश्तये मोहब्बत में मुन्सलिक अगर हों।
बनजायें एक माला सबके दिलोंके मनके॥
नफरत का है यह आलम गलयत का जोर इतना।
आता है कोईखिच कर आता है कोई तन के॥
दैरो हरम में पूजा जब है उसी सनम की।
बेहुद तफर्रुके हैं फिर शेखो ब्राह्मण के॥
फर्रुख निगाह नर्गिस हैरत से देखती है।
होते हैं लाल पीले क्यों फूल इस चमन के।
(यह नज़्म गुजरा वाला के जलसये जुल्बामें पढी गई
थी जो बहुत मकबूल हुई)

क्याहै परवाह मुझे अग़यार के धमकाने की।
धमकियां किस लिये देते हो जेलखाने की॥
जां हथेली पेरखी सिर से कफन बांधा है।
दिल में हिम्मत है मेरे मुल्क पर मर जाने की॥
बखुशी तन को मेरे डालदें जन्जीरें वह।

उमर कटती है यों ही मुल्क के दीवाने की ॥
सैकड़ों सर पे मेरे खौफ के बादल बरसे।
दिलसे काफूर मगर बात है डर जाने की
बिजलियां लाखगिरें जुल्मो सितम की लेकिन।
दिलको आदत ही नहीं शाद के घबराने की ॥

तर्क ताल्लुक़

होंगे नहम जो तर्क ताल्लुक बेकार बन्द।
होगा न उनके जुल्म का दर जीम्हार बन्द ॥
सरकारहो का यक दिन सब कार बार बन्द।
हो डाक बन्द रेल बन्द और तार बन्दा ॥
जो चीज जिस्म पर हो मत हो साख्त हिन्द की।
टोपी कमीज कोट पाजामा इजार बन्द ॥
हमपर खुलें जब उनकी अजब पेश बन्दियां।
हम ने भी करना उनसे किया पेतगार बन्दा ॥

परवाह न करो

रोज होती है हम पै जफा होने दो।
गर कोई होने को नाजिल हो बला होने दो।।
पेय कोई से सरोकार न रखो हरदम।
काम पूरा तो कोई यहरे खुदा होने दो ॥
पद घर आयें जो तमन्नायें हैं दिल की सारी,

मुस्तजाब अपनी कोई धक दुआ होने दो ॥
फिर किसी काम का होना नहीं हरगिज मुश्किल।
नियत इक बार तो वा सिद्को सिफा होने दो ॥
दम में खुरशीद सिफत होंगे यह ज़र्रे रख्शां,
सायये महरे नबी इनपे जरा होने दो।
चाहते हो कि मिले आबे हयाते मकसूद।
खिज़ "इखलास" को फिर राहनुमा होने दो।

कब तक

करेगा हम पे तू जोरो सितम ऐ आसमां कबतक,
सहेंगे हम तेरी गरदिश की आखिर सख्तियां कबतक।
तेरी गरदिश ने आखिर ख्वाब से चौंका दिया हमको,
हम उडती देखते दुनियां में अपनी धज्जियां कबतक।
न खामोशी की ताकत है न तावे जब्त है अब तो,
हम होती देखते दुनियां में अपनी ख्वारियां कबतक।
हिफाजत फर्ज है इसलाम की तुझ पर दिलो जां से,
रहेगा सोचता मुसलिम तू अब सूदो जयां कबतक।
खिलाफत जाती है हाथ से अब तो सम्भल गाफिल।
फिरेगा दहर में मुसलिम तू यूं बे खानमां कब तक।
अगर आज़ाद होना है तो ऐ हिन्दोस्तां वालो!
रहोगे महवजर्से नाक्ये सदकारवां कब तक॥

पड़ी है याके गरदाबे बला में कौम की कश्ती।
चलेगा नाखुदा अपना न हर पोरो जवां कबतक॥
फिदा होने को तू हिन्दूस्ता पर हो कमर बस्ता।
रहेगा सोलता महरूम तू सूदों जयां कब तक॥

हिम्मत करो जवानो

ऐ काश जुल्म अपना खोफो वो जरर से निकले।
और कोम दस्त चर्ख बेदाद गर से निकले॥
देरीना सोग यारब हर एक घरसे निकले।
और नगमये मसर्रत दीवारो दरसे निकले॥
हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले॥१
लो खुलगई घटायें अब साफ आसमा है।
वह जोर शोर पहिला तूफान का कहा है॥
आई हवा मुआफिक, तय्यार बादबां है।
चप्पू चलाओ यारो गर तुम में कुछ तवां है॥
हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले॥२
कैसा ही पुर फिजा है वह सामने किनारा।
बागे अदन खुला है जन्नत है आशकारा॥
तूफां से बच गये हो हिम्मत करो दोबारा।
जा लेगये सलामत दिलको अगर उभारा॥
हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले॥३

बेफिक्र क्यों पडे हो कुछ हाथ भी हिलावो।
गर दाब से निकल कर चाहे मजे उड़ावो ॥
साहल भी सामने हो फिर भी न हो बचावो।
हानत है अपनी हस्ती गर इस तरह मिटावो ॥
हिम्मत करो जवानो कश्ती भवरसे निकले ॥ ४ ॥
डूबे अगर यहां तुम यह लोग क्या कहेंगे।
हां तुम को नंगे गैरत सब बरमला कहेंगे ॥
नाकारा सुस्तहिम्मत गुजरा गया कहेंगे।
इससे भी बढ़के शायद तुम को बुरा कहेंगे ॥
हिम्मत करो जवानों कश्ती भवर से निकले ॥ ५ ॥
गफलत से बाज आवो फुरसत है कोई दमकी।
ऐसा नहो कि देखो फिर राह सब अदम की ॥
छाजायें सिरपे होकर तूफां घटायें गम की।
गिर जाये आस्मां से बिजली कोई सितम की ॥
हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले ॥ ६ ॥
कश्ती भंवर से निकली कोशिश से गर तुम्हारी।
खुश होके खल्क देगी शाबाश तुमको सारी ॥
अपनी भी जां बचेगी इज्जत भी होगी भारी।
दरकार है दिलेरो एक दम की होशियारी ॥
हिम्मत करो जवानो कश्ती भंवर से निकले ॥ ७ ॥
हिम्मत करो जवानों, हिम्मत के खानदानो !
गर कुछ दिलावरी है दिखलायो पहलवानों ॥
हां जोश नौजवानी जाहिर करो जवानो।

गुर्ज़ आज़मा दिलेरो मैदान के यगानो ।
हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले ॥ ८ ॥
दिखलावो ज़ोरे बाज़ू भुंझलावो शेर मर्दों ।
गर कुछ हिले समन्दर छाती को चाक करदो ॥
मौजे फना के मुंहको मिट्टी से उठ के भरदो ।
अपनी सलामती की बदख्वाह को खबर दो ॥
हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले ॥ ९ ॥
किश्ती जो कौम का है मझधार में फसी है ।
किश्ती सवार हैरां । हसरत है बेकसी है ॥
मायूस हो रहे हैं और दिलको बेकसी है ।
है आसरा खुदा का उम्मीद एक यही है ॥
हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले ॥ १० ॥
कामे नहग ताऊन चारों तरफ खुला है
मंडलाती फिरती हरतरफ लास की बला है
ग़फलत की काली काली छाई हुई घटा है
बहरे खतर नहीं हो मदहमकी सदा है ।
हिम्मत करो जवानो कश्ती भवर से निकले ॥ ११ ॥

एकौम यागे हिन्द को यागे जिनां बना

खुश काना जेर साया दरख़्ते तपां बना ।
कतरे में जो चमन हो वहां आशयां बना ॥

बांगे दराये ग़ैर से गोश आशना न हो।
सालारजिस का गांधी हो वहकारवां बना॥
हो गर्दिशे ज़माने से कुछ यह भी वह सवर।
इस आस्मां पे और तू एक आस्मां बना॥
ऐ कौम हो सफीनये ईसार में सवार।
अपने लहू से आज तू सैल रवां बना॥
शामो इराक अर्ब में शमशेर ज़न है क्या।
हिन्दी है तू तो हिन्द को रश्क जिनां बना॥
मिस्ले हुमा है गर तुझे शोहरत की आरज़ू।
रहने दो लामकां से परे तू मकां बना।
सय्याद का खतर हो न गुलची का खौफ हो
ऐ कौम बाग हिन्द को बागे जिना बना॥
बादे सनम को छोड़ के चिश्ती पये रकीब
बन्दूक तोप खन्जरो तेगो सिना बना।

शहीदों की यादगार

वतन के नाम पर दी जान जिन शहीदों ने
सितम कशी की रखी आन जिन शहीदों ने॥
बलन्द कौम की शान जिन शहीदों ने।
सर अपने कर दिये कुर्बान जिन शहीदों ने॥
तड़प कर मर गये जो मुर्गे नीमजां की तरह।

लहू में गर्क हुये सैद वे ज़बाँ की तरह ॥
जो नाम कर गये सिर दे के जा नसारी का।
जहाँ में शोर है जिनकी वफ़ा शआरी का ॥
न खौफ था जिन्हें तोपों की शोलाबारी का।
जिन्हे गिला हुआ सदमा न जख्म कारी का ॥
लहू से जिन के हुई सुर्ख खाक दिल्ली में।
बधी है जिन की शहादत से धाक दिल्ली में ॥
गज़ब का जिन के जनाजों पे अज़दहाम हुआ।
शुमार जिस का न था वह हजूम आम हुआ।
फ़िदाईयाने वतन का वह एहतराम हुआ।
कि नक्शे दिलके नगिनों पर उनका नाम हुआ ॥
हर एकशख्स ने आंसू बहाये उन के लिये।
कि रोये फूट के अपने पराये उन के लिये ॥
इक हाल उन के लिये शान दार बनता है।
सितम कशों के लिये यादगार बनता है ॥
वफ़ा का नक्श सरे रह गुज़ार बनता है।
वह मरमिटों का निशाने मज़ार बनता है ॥
हर एक शख्स पे तामीर फ़र्ज़ है इसकी।
हज़ार तरह से तदबीर फ़र्ज़ है इसकी ॥
बढ़ा के हाथ दो इस कौमी काम का चन्दा।

गिरह से निकले शहीदों के नाम का चन्दा ।
हज़ार का हो कि एक दाम का चन्दा ।
हो पब्लिक हाल में हरखासो आमका चन्दा ॥
वह हाथ उठाये जो हुब्बे वतन का शैदा है ।
सवाबे आम है दे जिस को जो कि पैदा है ॥
जो आज नाम से चन्दे के मुंह छिपावोगे ।
तो फिर जहां को किस मुंह से मुंह दिखावोगे ।
कभी जो नाम शहीदों का मुंह पे लावोगे ।
वह याद रखना कि गैरों से मुंह की खावोगे ॥
कहेंगे लोग शहीदों को अपने भूल गये ।
वह अपनी जान से इन के लिये फजूल गये ॥
हर एक तरफ से मुनासिब है बारिशे ज़र हो ।
न टूटे तार लगा तार हो बराबर हो ॥
खुसूसियत नहीं मुफलिस हो या तवगर हो ।
यह कारे खैर है दे जिस को जो मयस्सर हो ॥
हो याद गार ज़माना वह पब्लिक हाल बने ।
'ख़लीक़' क़ौमी इमारत है बेमिसाल बने ॥

इसलिये तुमहिन्द में आयेथे इङ्गलिस्तान से

जी में हैं सौ हसरतें दिल में सौ अरमान से ।
होते २ खोगये हम तंग अपनी जान से ॥

सख्तियां यूं अहले योरुप अहल हिन्दुस्तान से।
इसलिये तुम हिन्द में आये थे इंग्लिस्तान से?
हाय अमृतसर में बन कर टोलियों की टोलियां।
बे गुनाहों पर चलाईं किस गजब से गोलियां॥
हम से तो तुम क्या गये तुम तो गये ईमान से।
इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से?
अब तुम्हें मुश्किल पड़ीं कि हमने तन आसानियां।
मालो जर सिदका किया बच्चों की दी कुर्बानियां॥
फिर गये तुम फिर भी अपने अहद से पैमान से।
इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से?
हम तुम्हारे वास्ते हिन्दू मुसलमां सब लड़े।
हमने जब फरियाद की तो जेलखानों में पड़े॥
खूब यह बदला दिया अहसान का अहसान से।
इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से?
सैकड़ों लाखों हजारों पाई पाई तुमको दी।
हमने मेहनत से कमाकर सब कमाई तुम को दी॥
क्यों किया टरकी से तुम ने क्या किया सुलतान से।
इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से?
हिन्द से आबाद दुनिया हिन्द ही बरबाद हो।
शाद तुम जिसकी बदौलत हो वही नाशाद हो॥
शानो शौकत उसकी मिट जाये रहो तुम शान से।

इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ?
तुम यह कहते हो कि हांजी हांजी हम कहते रहें।
तुम सितम करते रहो और हम सितम सहते रहें॥
तुम जो चाहो हमसे करवालो पकड़ कर कान से।
इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
तुमने यह ठानी नहीं सुनना किसी फरियाद का।
हमने यह ठानी की बस जाने ही दें इमदाद को॥
वेद से साबित है यह रोशन है यह कुरआन से।
इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ?

इसलिये हम हिन्दमें आयेथे इङ्गलिस्तान से

धन के ताजिर घर से निकले हम निराली शान से।
चाल क्या अच्छी चले हम अहले हिन्दुस्तान से॥
कर लिया उनको मुसख्खर देखकर नादान से।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
हिन्द में है जोर बाजू पर हकूमत की बिना।
जलिया वाले का है ताजा अभी तो हादिसा॥
हुक्मरानी को बदलदें किस तरह ईमान से।
इसलिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
तुम हमारे वास्ते करते न क्यों आसानियां।
हमने करली अपने कब्जे में तुम्हारी रोटियां॥

दाम में लाये तुम्हें हम वादा वो पैमान से ।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
हमने लड़वाया तुम्हे आपस में इस में शक है क्या ।
अपना उल्लू जब पड़ा जिस ढग से सीधा किया ॥
कर लिया मगरूर तुमको जान कर अनजान से ।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
जिस तरह है आज हिन्दुस्ता हमारे जेर पा ।
एक दिन महकूम हो जायेगा सारा एशिया ॥
जो किया सुलतान से वैसा करें जापान से ।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
हिन्द हो आबाद या इफलास से बरबाद हो ।
लेकिन इङ्गलिशमैन का घर हर तरह आबाद हो ॥
जिल्लतें काले सहें गोरे गुजारें शान से ।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
जो हमारा हुक्म हो उस पर कहो तुम जी हुजूर ।
नेको बद को हम समझते हैं नहीं तुम को शऊर ॥
खिदमतें तुमसे हमेशा लें पकड़ कर कान से ।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ॥
पालिसी अपनी नहीं सुनना किसी फरियाद को ।
कौन देखे अब पहुंचता है तुम्हारी दाद को ॥
क्या डरेंगे हम तुम्हारे वेद और कुरआन से ।

इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ?
तुम यह कहते हो कि हांजी हांजी हम कहते रहें।
तुम सितम करते रहो और हम सितम सहते रहें॥
तुम जो चाहो हमसे करवालो पकड़ कर कान से।
इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
तुमने यह ठानी नहीं सुनना किसी फरियाद को।
हमने यह ठानी को बस जाने ही दें इमदाद को॥
वेद से साबित है यह रोशन है यह कुरआन से।
इस लिये तुम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से ?

इसलिये हम हिन्दमे आयेथे इङ्गलिस्तान से

धन के ताजिर घर से निकले हम निराली शान से।
चाल क्या अच्छी चले हम अहले हिन्दुस्तान से॥
कर लिया उनको मुसख्खर देखकर नादान से।
इस लिये हम हिन्दमें आये थे इङ्गलिस्तान से॥
हिन्द में है जोर बाजू पर हकूमत की बिना।
जलियां वाले का है ताजा अभी तो हादिसा॥
हुकमरानी को बदलदें किस तरह ईमान से।
इसलिय हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
तुम हमारे वास्ते करते न क्यों आसानियां।
हमने करली अपने कब्जे में तुम्हारी रोटियां॥

दाम में लाये तुम्हें हम वादा वो पैमान से।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
हमने लडवायां तुम्हे आपस में इस में शक है क्यों।
अपना उल्लू यन पड़ा जिस ढग से सीधा किया॥
कर लिया मगलूब तुमको जान कर अनजान से।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
जिस तरह है आज हिन्दुस्ता हमारे जेर पा।
एक दिन महकूम हो जायेगा सारा एशिया॥
जो किया सुलतान से वैसा करें जापान से।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
हिन्द हो आबाद या इफ़लास से बरबाद हो।
लेकिन इङ्गलिशमैन का घर हर तरह आबाद हो॥
जिल्लतें काले सहे गोरे गुजारें शान से।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
जो हमारा हुक्म हो उस पर कहो तुम जी हुजूर।
नेको बद को हम समझते हैं नहीं तुम को शऊर॥
खिदमतें तुमसे हमेशा लें पकड कर कान से।
इस लिये हम हिन्द में आये थे इङ्गलिस्तान से॥
पालिसी अपनी नहीं सुनना किसी फरियाद को।
कौन देखें अब पहुचता है तुम्हारी दाद को॥
क्या डरेंगे हम तुम्हारे वेद और कुरआन से।

मुझे हाँ कीजिये ज़ेरे हावालात ॥
अदालत गर ज़िरह मुझ पर करेगी ।
सुनूगा गौर से उस के सवालात ।
मगर चुप हो रहूंगा मेरी निसबत
करेंगे गैर इस्तफसार हालात ॥
मैं सुनकर अपने जुर्मों को कहूंगा ।
कि यह बातें हैं अज़ किस्मे महालात ॥
पड़ा सड़ता रहूंगा जेल में मैं ।
मुझे हर तरह के होंगे अज़ालात ॥
मेरी करतूत पर यहसगे अहबाब ।
न होंगे एकसा सबके मकालात ॥
मगर परवाह नहीं मुझको कुछ इसकी ।
कि मैंने मार दी दुनियां पै अब लात ॥

मकूला शायर

यह हुस्न नियत और अज़म मुसम्मम् ।
न हो जब तक नहीं हासिल कमालात ॥
स्वदेशी बाई काट अदम तआवुन ।
निहत्थों के लिये हरबी हैं आलात ॥
भरोसा तू भी रख गांधी पे स्वराज ।
मिलेगा करेगा न कुछ एहतमालात ॥

गर्ज़ कुर्बान हो तुम भारत पे इमसाल।
दिखा दो करके कायम कुछ मसालात ॥

एक पोलीटीकल कैदी के दिली जज़बात

कैद क्या चीज़ है ? होती है मशक्कत कैसी ?
लाइये सर पर उठालूं यह मुसीबत कैसी ॥
जुर्म हुब्बुलवतनी के लिये बांधा मुझको ।
की मेरे साथ अदालत ने अदावत कैसी ॥
शौक परवाज़ में देखा तो मेरे पर कतरे।
पूरी मिकराज़ के हाथों हुई हसरत कैसी ॥
शिकवये ज़ोर पे हाकिम ने दहा बन्द किया। –
रफा सरकार ने की मेरी शिकायत कैसी ॥
अपने इफराद के हाथों से हुई जो बरबाद।
काबिले रहम है उस कौम की हालत कैसी
दिल जो आज़ाद है सीने में तो गम काहे का ?
क्या हयाक़ात है? होती है हरासत कैसी ?
यह तो राहत है मसर्रत है हकीकत में फलक।
कौम के वास्ते जो आये वह आफत कैसी ?

च्यूंटी और राहीआदर्स

कल कोई नन्ही सी च्यूंटी अपने मुंह में कुछ लिये।
दौड़ती तेज़ी से देखी मैंने एक बाज़ार में ॥

याद में तेरी मुझे रहती है हरदम बेकली ॥
मैं हूं इतमीनान से हासिल है मुझको शान्ती।
तू है सतरानी तुझे शायाँ नहीं है बेकली ॥
शान्ती रख बेकली से अश्क आँखों में न भर।
दिल में अपने धीर धर ऐ प्यारी माता गम न कर ॥

तरानये फलक

बाग से मेरे सर का झौंका आशियाना ले गया।
अन्दलीबों का कफस में आबो दाना लेगया ॥
कौन कहता है जबरदस्ती से हम पकड़े गये।
जेल में खुद हम को शौके जेलखाना लेगया ॥
कुछ गुलो गुलचीं शिकवा बुलबुले भारत न कर।
तुझको पिंजरे में है तेरा चहचहाना लेगया ॥
क्यों घटा अदबार की छाये न अहले हिन्द पर।
खींच कर योरुप है सब मालो खज़ाना लेगाया।
पूछते क्या हो अमीदारों की दौलत क्या हुई।
कुछ वकील और नशा कुछकुछ मालखाना लेगया
शमये किस्मत से एक दाना को हम तरसा किये।
झोलियां भर कर बगरना कुल जामना ले गया।
भूक से क्योंकर न तड़पें हिन्द के बच्चे फलक !
खींच कर शाली प्रावर दाना दाना ले गया ॥

शाह से कहना हमारे हिन्द खस्ता हाल है

देखलो हजरत डियूक खुद मुल्क की क्या चाल है।
शाह से कहना हमारे हिन्द खस्ता हाल है॥
आपको हालात जो बतला रहे हैं हुक्मरां।
राग उनका दूर हकीकत बेसुरा बेताल है॥
हिन्द मुतमैयन नहीं है आपकी स्कीम से।
आपके आने पे हरजा इसलिये हड़ताल है॥
आपके भेजे हुवो न अपने मतलब के लिये।
हिन्द के लोगों से हासिल कर लिया सब माल है॥
फर्क काले और गोरे का मिटा अब तक नहीं।
दौर दौरा खुद पसन्दी का वही ताहाल है॥
इस कदर हिन्दी हकूमत से हुये हैं मुस्तफीद।
रोजमर्रा मुल्क में पड़ने लगा अब काल है॥
आये दिन अब गाड़िया लड़ने लगी हैं राह में।
खून आला है यह उनका और यह अपना हाल है॥
क्या शिकायत है डियूक की क्या गिला है शाह का।
हम तो कहते हैं बदर यह शामते आमाल है॥

मयस्सर देखिये होगी हमें आजादियां

कबतक

रहेगा हम गरीबों पर फलक नामेहरबां कबतक।

रुलायेगा हमें यूं इन्कलाबे आस्मां कबतक ॥
पिरोये जायंगे अश्कों के कबतक हार आखों में।
रहेगी बेअसर अपनी खुदा आहो फुगां कबतक ॥
सहेंगे कबतलक हम रन्ज अपनी बेनवाई का ।
उठाये जायगी सदमे यह जाने नातवां कबतक ॥
गिरेंगी कबतलक सोजे फुगां की बिजलियां दिलपर।
जलेंगे आतशे गम में हमारे उस्तख्वां कबतक ॥
कफस में कबतलक तड़पेंगे हम बेबालो पर योंही।
फिराके शाखिदे गुल में रहेंगे खूं चकां कबतक ॥
मिलेंगे हम सफीराने चमन से कब खुदा जाने।
मयस्सर देखिये होगीं हमें आजादियां कबतक ॥
वह दिन आजादियों के और रातें वह मुरादों की।
दिखायेगा हमें "आनन्द" दौरे आस्मां कबतक ॥

लाख की एक बात ।

कोई कहता है कि साहब से मुलाकात करो ।
कोई कहता है मियां तर्कमवालात करो ॥
कोई कहता है कि दबकर रहो हरएक से तुम ।
कोई कहता है कि आजादे ख्यालात करो ॥
कोई कहता है कि बसरकरो खुशी से अपनी ।
कोई कहताहै तहम्मे मकासात करो ॥

कोई कहता है जहाँ पर रहे सबका शिकवा ।
कोई कहता है कि किसी की न शिकायात करो ॥
कोई कहता है करो ख़िदमते सरकार की सदा ।
कोई कहता है कि अब तर्क ख़ताबात करो ॥
कोई कहता है कि अकेले ही रहो बन्दा नवाज ।
कोई कहता है कि हर एक से मवाख़ात करो ॥
कोई कहता है सदा उज़्र से डरते रहो तुम ।
कोई कहता है मियाँ शौक़े ख़्यालात करो ॥
कोई कहता है कि सुनो ताज़ा फ़साना साहिब ।
और अब तर्क सभी कुहना हिकायात करो ॥
कोई ख्वाह कुछ भी कहे नूर पे मैं कहता हूँ ।
फ़ायदा जिस से कि हो मुल्क को वह बात करो ॥

आज

सुनअत न कोई फ़न है न इल्मो हुनर है आज ।
हिन्दुस्तां का हाल ब रंगे दिगर है आज ॥
सोने की चिड़िया कहते हैं जिस को यह हिन्द था ।
अफ़सोस बेज़री से वह बेवालो पर है आज ॥
जो ज़र्रा, गाह मरदुमे कुदसी सिफ़ात था ।
सद हैफ़ बन्दरों का वही मुस्तक़र है आज ॥
हर तिफ़्ल हर जवान हर एक पीर कोहना साल ।

बाकी है जिस ज़मीं पर गुर्जरे हुवों की शानें ।
अब तक लटक रही है टूटी हुई कमानें ॥
जिस की फुजाये आलम में गूंजती थीं तानें ।
उस सरज़मीं को फिर क्यों ख़ुल्दे वरीं न मानें ॥
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है ॥
नारद ने देश भक्ती जिस देश को सिखाई ।
और इस लगन में जां तक कुरबान कर दिखाई ।
हुब्बे वतन की जिसने थी लहर इक चलाई ।
जिसके लिये शहादत इस ताजवर ने पाई ॥
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है ॥
औतार सत्य ग्रह का गांधी जहां पला है ।
और जिस वतन की ख़ातिर सर्वस्व दे चुका है ॥
जिस कश्तिये वतन का गांधी सा नाख़ुदा है ।
रस्मो शआर ग्रीवा जिस देश का वफ़ा है ॥
मेरा वतन वही मेरा वतन वही है ॥
पंडित तिलक महाराज आदम थे जिस अदन के ।
और मोतीलाल नहरू बुल बुल हैं जिस चमन के ॥
टीगोर से पिसर है जिस मादरे वतन के ।
जिस के लिये हैं नारे शमशेर जून विपिन के ॥
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है ॥
जिस आस्मा के अख़्तर हैं मोलवी दरख़्शां ।

शोकत अली जहां है मिस्ले गुले गुलस्तां ॥
हसरत महात्मा है सौ दिल से जिसपे कुर्बां ।
फर्जन्द जिसके दोनों हैं हिन्दू ओ मुसल्मां ॥
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है ॥

जिस के हकीम अजमल और श्रद्धानन्द सर है ।
और लाजपत जहां के बेताज ताजवर है ॥
किचलू, राम भजदत्त, खुरशेद हैं कमर हैं ।
सत्य पाल किचलू जिस के लख्ते दिलो जिगर हैं ॥
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है ॥

है नोहा साज जिसके इकबाल से सखुनवर ।
फन्दा हैं जिस हवा पर अशआर मीरो अकबर ॥
हजरत फलक गये हैं जन्दा में जिसकी खातिर ।
और नाज मुब्तदी भी कहता है जिसको अकसर ॥
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है ॥

सारे जहां का दिल है हिन्दूस्तां हमारा

बदलेगा अब यकीं है वहमो गुमां हमारा ।
शक को मिटा रहा है इकुल बयां हमारा ॥
रोशन है हाल दिल सब आइना सां हमारा ।
जौहर दिखा रहा है हुस्ने बयां हमारा ॥
फुरकत में कुश्तगां की लायेगा रंग एक दिन ।
खूने शहीद बन कर दरदो फुगां हमारा ॥
जो आंख से गिरा है कतरा वह बेबहा है ।

दुर दाना बन गया है अश्के खां हमारा ॥
दिल की तडप तुझे भी तडपायगी सितम गर।
बिजली बना हुवा है दर्दे निहा हमारा ॥
तै हो गई है राहे दुश्वार हिम्मतों से।
मन्जिल पे आगया है अब कारवां हमारा ॥
है बेकसी निगहबां गुरबत के हैं हवाले।
हसरत से तकते है मुंह वो रफ्तगां हमारा ॥
अब दाग दिल का होगा हरसू चमन जहां में।
बनकर चलेगा सिक्का नामो निशा हमारा ॥
हसरत जवान को है अरमां जईफ का है।
सारे जहां का दिल है हिन्दुस्तां हमारा ॥
अरमा भरा हुवा दिल खाली है हसरतों से।
श्री याद देखिये कब होगा मकां हमारा ॥
फरियाद रस बनायें अब मोस किसको रौनक।
सुनता नहीं खुदा भी शेवन यहां हमारा ॥

हिन्दुस्तान मेरा

जमी मेरी यही है पर नहीं अब आस्मा मेरा।
बिरादरतक जुदा है आज, कल था कुल जहां मेरा॥
जरा होशियार रहना इस से यह चर्खे सितम पेशा।
कयामत है खुदा का कहर है सोजे निहां मेरा॥
किसी को क्या अगर मैं हालगम कहता हूं कहने दे।

है मेरा दिल, वयाँ मेरा, जबा मेरी दहन मेरा ॥
गुलो नसरीनसुबुल की जगह अब खाक उडनी है।
उजाडा हाय किस बेदर्द ने यू गुलिस्तां मेरा ॥
भलाई है वतन की गर तो अपनी भी भलाई है।
जुदा उससे कभी मुमकिन नहीं सूदो जयाँ मेरा ॥
जमाने की है नयरगी कि अब तरतुरसरा में है।
कभी अर्श मुअल्ला पर अजीजो था मकां मेरा ॥
दिलेरी में कभी था पास अब भी जिसका जी चाहे।
करे आहो फुगां में दर्द गम में इम्तहां मेरा।
गुजरताहै जो दिल पर माजरा उसका कहूं किससे।
बजुज जाते खुदा है कौन कहिये राजदां मेरा ॥
तबाही जिसकी किस्मत में लिखी वर्क हसद से थी।
उसी गुलशन की शाखे खुश्क पर है आशियां मेरा ॥
नदिलमें दर्द है उसका न दो आंसू हैं आखों में।
कहो किस मुंह से कहते हो कि है हिन्दुस्तां मेरा ॥
हो मरकुलमौत यां सी० आई० डी० से कुछ ताल्लुक है।
कहो तो क्या करोगे पूछ कर नामो निशा मेरा ॥

घर था दिलावरों का क्या यह वतन वही है?

दाचे में कौम तेरे कुछ हड्डिया है बाकी।
उजडे हुये चमन में कुछ आशिया है बाकी ॥

इसलाफ़ के जहां में कुछ २ निशां है बाकी।
वह जाहरे शराफत तुझ में कहां है बाकी॥
तुफ़ २ है शाम तेरी हसरत नसीबों पर।
ज़िल्लत नसीबां हैं ज़िल्लत नसीबों पर॥
दिल सर्द है रगों में गोया लहू नहीं है।
हुब्बे वतन की हम में वह आह बू नहीं है॥
वह वलवले नहीं हैं वह आर्जू नहीं है।
गुम है रहे तलब में वह जुस्तजू नहीं है॥
गुम करदा कारवां में जो मीर कारवां थे।
बे नामो बे निशां हैं जो साहबे निशां थे॥
हम फौक़ लेगये थे रफ़अत में इक जहां से।
ऊंची ज़मीं हमारी थे बाम आस्मां से॥
मोती कभी बरसते थे ताज पर निशां से।
आंसू टपक रहे हैं बाचश्म खूं चका से॥
टुकड़े जो लाल के थे लख्ते दिले खूंजों हैं।
जो शब चिराग थे वह फरियाद आतशीं हैं॥
महफिल में झलमलाते हैं कुछ चिराग अपने।
सब उठ गये जहां से रौशन दिमाग अपने॥
हैं यादगार हसरत कुछ दिल दिमाग अपने।
छलकाये आस्मां ने भरकर अयाग अपने॥
अब आह वह कहां है बज़्मे कोहन का नक्शा।

बिगड़ा हुआ है यानी अपने वतन का नक्शा ॥
लाखों जगन का मसकन है आह अब चमन में ।
धुन्धली सी शमा है एक यारों की अन्जुमन में ॥
पुतला है बेबसी का लपटा हुवा कफन में ।
उड़ती है खाक हसरत अब कूबकू वतन में ॥
कैसा वतन वतन का एक नाम रह गया है ।
यह मैकदे में बाकी एक जाम रह गया है ॥
दादे कमान गर दी अर्जुन ने जिस जमीं पर।
भीष्म सा शूरमा था जिस जापे कोह पै कर ॥
मिट्टी से जिसकी उठा प्रताप सा दिलावर ।
मैदान में रहा जो बरसों हरीफ अकबर ॥
घर था दिलावरों का क्या यह वतन वही है ?
सींचा गया था खूं से क्या यह चमन वही है ?
जौहर यही है तुझमें क्या ओ वतन की मिट्टी !
रंगी है अब भी खूं से क्या तू चमन की मिट्टी?
बरबाद होरही है यजमे कोहन की मिट्टी ।
यारों की खाक उगल दे ओ अन्जुमन की मिट्टी ॥
नक्शा वही नजर में फिर जाये फिर वतन का ।
फिर रंगो रूप निखरे उजड़े हुये चमन का ॥
बामे फलक से ऊंचा हो फिर निशां हमारा ।
सारे जहां में हम हों सारा जहां हमारा ॥

अर्शे बरीं का जीना हो आस्मा हमारा ।
अज्मत निशां बने फिर हिन्दुस्तां हमारा ॥
फूटें नये शिगूफे फिर नखले आरजू में ।
गर्मी बढ़े दिलों में सुरअत बढ़े दिलों में ॥

नवयुवको को एकदेशभक्त का सन्देश

उजड़ा हुआ पड़ा है सब गुलिस्तान भारत ।
बरबाद होचुका है अज्मत निशान भारत ॥
पहिले तमाम थाकें अब होगये फसाने ।
जाती रही यकायक वह आन बान भारत ॥
भारत की हाय कश्ती गरदाब में फसी है ।
किस नींद सोरहे हो ए कश्ती बान भारत ॥
उठ बैठो नौ जवानो अब तो इसे बचालो ।
कुछ कुछ अभी है बाकी नामो निशान भारत ॥
गर होश में तुम आवो तो कुछ नहीं है मुशकिल ।
हूं फिर यही देख लेना पहिली सी शान भारत ॥
मालूम है तुम्हे कुछ रोजे अजल से सब के ।
उस्ताद रहते आये हैं आलमाने भारत ॥
लेकिन हमारी हालत अब रहम के है काबिल ।
यहशी कहा रहे अब बाशिन्द गान भारत ॥
इसकी वह शान शौकत सब खाक में मिली है ।

यहीं हुये हैं यहीं रहेंगे, तान किसी की नहीं सहेंगे ।
जो जी में है वही कहेंगे, है यह सत्य मुक्ति का द्वारा ।
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥
हिन्दू मुस्लिम और ईसाई, सिक्ख, पारसी, जैनी भाई ।
सबके सब इसके शैदाई, कहते हैं यह देश हमारा ।
है यह हिन्दुस्तान हमारा ॥

मिलेगी हाथसे तेरे हमे ज़ालिम शिफा कबतक

करेगा ए फलक हम पर भला जोरो जफ़ा कब तक ।
मिलेगी हाथ से तेरे हमे जालिम शिफा कबतक ॥
रहेगा कब तलक भारत में डेरा रजो कुलफत का ।
रहेंगे हिन्द के वासी फिकर या रहनुमा कब तक ॥
हाय काफूर है यारो कदीमी शानो शौकत सब ।
रहेंगे या खुदा हिन्दुस्तां वाले गदा कब तक ॥
नहूसत में सितारा है प्यारे हिन्द का अब तो ।
हाय गमसे रहेगा हिन्द प्यारा आशना कब तक
है ऐसी जिन्दगी से तो ऐ यारो मौत ही अच्छी ।
मगर जाने खुदा कि आयेगी या पर कज़ा कबतक ॥
रहेगा कब तलक हिन्दूस्तां में हटका कुलफत का ।
यहा से होवेगा रूखसत फि,कर मुश्किल कुशा कबतक॥
कदीमा शान पर अब छोडदों तुम मारना डींगें ।

गुजश्ता शान पर करते रहोगे मरहबा कबतक ॥
अगर है हिन्द से उलफत बनो इतहाद के हामी ।
रहेगी जोरों पर ना इतफाकी की सदा कबतक ॥
बहुत कुछ कह चुका है ये जिशाक अब बन्द कर नाला ।
रहेगा कौम में होशयारी का तू मुलतजा कबतक ॥

दुआ लेलो यही दिन है

दुआ लेलो यही दिन है बिचारी हिन्द मादर से ।
यह ओसर फिर मिल नहीं सकता जवानो फिरनयेसरसे ॥
मिली होगी किसी नेशन को आजादी मुकद्दर से ।
हुआ होगा किसी का राज हम तो उमूभरतरसे ॥
शहीदों का लहू गर देश पर बरसे तो यूं बरसे ।
कि पैदा हो निहा हो कौमयत भारत में घर घर से ॥
बिचारी मादरे भारत की हालत पूछते क्या हो ।
पड़ी है खाक पर यह मुंह ढके गैरत की चादरसे ॥
अभी से इस कदर नफरत हथकड़ियों के कगन से ।
बधेगा एक दिन सेहरा शहादत का तेरे सरसे ॥

हालत कौम

ए क़ौम देख तो तेरी हालत को क्या हुआ ।
हैरत में आइना है कि सूरत को क्या हुआ ॥
अब से कमां की तरह कमर सब की झुक गई ।

अर्जुन भी पूछता है कि हिम्मत को क्या हुवा ॥
मारे जो कोई फूक तो उड जाये अहले हिन्द ।
चक्कर में भीमसेन है ताकत को क्या हुवा ॥
हम को जलील खस्ता ओ मजबूर देख कर ।
प्रताप कह रहा है हमय्यत को क्या हुवा ॥
जिसने बडे बडों के छक्के छुडा दिये ।
उस शूरवीर कौम की हिम्मत को क्या हुवा ॥
इफलास में फसे हुये भारत को देख कर ।
हैरान में गजनवी है कि दौलत का क्या हुवा ॥
भाई को प्यासा देख के भाई के खून का ।
लछमण पुकारता है कि मुहब्बत को क्या हुवा ॥
इतने बहादुरों को फलक खागई ज़मीन ।
हैरां है पृथ्वीराज शुजाअत को क्या हुवा ॥

दर्दे दिल

हिन्द का उफ इन दिनों कैसा मुकद्दर होगया ।
जो कभी अलमास था वह काला पत्थर होगया ॥
ताज दुनिया का कभी कहलाता था प्यारा वतन ।
आज है पुर दर्द दिल का तेज़ नश्तर होगया ॥
जो मुल्क सोना कभी था आज मिट्टी भी नहीं ।
किस कदर बेकीमती नायाब गौहर होगया ॥

रोजो शब ‖ रोता रहता हिन्द की हालत पे मैं ।
अबनीसां से भी मेरा रोना बदतर होगया ॥
बेकसी ओ नातवानी ताज सर हैं बन गई ।
जहर से भी बढके है अब आबे कौसर होगया ॥
ऐशो राहत के किनारे से उठाया बाहर्जा ।
र जो गम के साहलों पर हैफ लगर होगया ॥
सर्द आहें हैं निकलती इस दिले पुर जोश से ।
आस्मा नारीक ‖ फैले रोशन अखतर होगया ॥
हुब्बे कौमी में कभी वहशत जो मुझको होगई ।
टुकड़े २ फिर गरेबां मेरा अक्सर होगया ॥
जजबये हुब्बे वतन दिल में हुवा है मोजजन ।
रात दिन है हिन्द का मुझ को तसव्वर होगया ॥
एक दो शिकवे अगर हों तो सुना भी दूं तुम्हें ।
इस जगह तो शिकवओं से एक दफ्तर होगया ॥
हिन्द की बहबूद की तदबीर ‖ में सोचता ।
एक तरहका सकता तारी है यह दिल पर होगया ।।
नाले सुन के मेरे मुर्दे भी कब्र में जी उठें ।
फिर कहा कि है बपा क्या यह महशर होगया ॥
चर्ख गर्दूं ने भी हम से बदले गिन२ कर लिये ।
बन्दा परवर जो कभी था जुल्म परवर होगया
'विशाक' अपनी जिन्दगी मुश्किल कटे हम किसतरह ।
जबकि तपता दर्द पे है अपना बिस्तर होगया ॥

प्रभो गरदिश में क्यों है आजकल तक़दीर भारतकी?

प्रभो गरदिश में क्यों है आजकल तकदीर भारतकी ?
कि बन बन कर बिगडतीहै हरएक तदबीर भारतकी।
हरोगे कौन दिन हे दयामय! पीर भारतकी।
बधावोगे न क्या भगवान कभी तुम धीर भारतकी ?
बतावो तो सही हम को कोई तकसीर भारतकी।
खबर तक भी नहीं लेते कभी दिलगीर भारतकी॥
हुई है दुर्दशा हे नाथ क्या गम्भीर भारत की।
नजर कुछ और ही आती है अब तस्वीर भारतकी॥
मिलाई खाक जो हमने यह तौकीर भारत की।
यह आखें कब तलक देखेंगी यह तहकीर भारतकी॥
रहे दिल पर सदा दिनकर खिची तस्वीर भारतकी।
रहे कानो में हर दम गुंजती तकरीर भारतकी॥

नया शिवालय

सच कह दूं ऐ ब्राह्मण गरतू बुरा न माने।
तेरे सनम कदों के बुते होगये पुराने॥
अपनो से वैर रखना तू ने बुतों से सीखा।
जंगो जदल सिखाया वायज को भी खुदाने॥

तब आके मैंने आखिर दैरो हरम को छोड़ा।
वायज का वाज छोड़ा छोड़े तेरे फसाने॥
कुछ फिक्र फूट की कर माली है तू चमन का।
बूटों को फू कडाला इस विषभरी हवा ने॥
पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है।
खाके वतन का मुझ को हर जर्रा देवता है॥
आमिल के गैरियत के पर्दों को फिर उठादें।
बिछुड़ों को फिर मिलादें नक्शे दुई मिटादें॥
सोती पड़ी हुई है मुद्दत से जी की हस्ती।
आ एक नया शिवाला फिर देश में बनादें।
दुनिया की तीर्थों से ऊंचा हो अपना तीरथ।
दामाने आस्मा से उसका कलश मिलादें॥
फिर एक अनूप ऐसी सोने की मूरती हो।
इस हरिद्वार दिल में लाकर जिसे बिठादें॥
सुन्दर हो उसकी सूरत छवि उसकी मोहिनी हो।
इस देवता से मांगे जो दिल की हो मुरादें॥
जुन्नार हो गले में तसबीह हाथ में हो।
यानी सनम कदे में शाने हरम दिखादें॥
पहलू को चीर डालें दर्शन हो आम इसका।
हर आत्मा को गोया एक आगसी लगा दें॥
आंखों की हैंझो गंगा ले ले के उसका पानी।

इस देवता के आगे एक नहर सी चलादें ॥
हिन्दुस्तान लिख दें माथे पे इस सनम के।
भूले हुये तराने दुनियां को फिर सुना दें॥
हर सुबह उठ के गायें मन्त्र वह मीठे २।
सारे पुजारियों को मय प्रीत की पिलादें॥
मन्दिर में हो बुलाना जिस दम पुजारियों का।
आवाजये अजां को नाकौस में छिपा दें,।
अग्नी है वह जो निर्गुण कहते हैं प्रीत जिसको।
धर्मों की यह बखेड़े इस आग में जला दें॥
है रीत आशकों के तन मन निसार करना।
रोना सितम उठाना और इनको प्यार करना॥

नया काबा

ऐ शेख गौर करके सुनले मेरे तराने।
ईमान की कहूँगा तू माने या न माने
की दैरकी मज़म्मत तूने सना हरम की।
क्या मुन्सफी सिखाई तुझको तेरे खुदाने॥
उलफ़त, यगानगत का वाजिब था वाज़ तुझको।
उलटा लगा यहां तू जंगो जदल सिखाने॥
हूरो परी के किस्से हैं मिट चुके जहां से।
अफ़साने देवताओं के हो गये पुराने॥

काबेकी सरजमी में कहता है तू खुदा है।
आँखों से दूरे में भी तू देख ले कि क्या है ॥
आ मजहबोंके एक दम झगड़े सभी मिटा दें।
आ दिल से इस्तयाजे दैरो हरम मिटादें ॥
हायल है मुद्दतों से हम में खिली कुदूरत।
आ मिल के बीच में से दीवार यह हटादें ॥
सुनसान हो रहा है अर्से से दिल का मैदाँ।
आ एक काबा तो इस देहत में बना दें ॥
फिर एक अजीब ऐसा उम्दा हो सग हिन्दी।
दीवार में हरम के लाकर जिसे लगादें ॥
दीवारो दर पे उसके हों एक दिलों के कुनबे।
उलफत यगानगत की गुलकारियाँ कराएँ ॥
करके चिराग रोशन फिर इत्तहाद का हम।
जन्नत से बढ़ के दिल के काबे को जगमगा दें ॥
लिखवा के आबे जर से आयाते हुब्ब कौमी।
जर दोज एक पर्दा ऊपर से हम गिरादें ॥
हरबाब हो निराला महराब हो अनोखी।
दुनिया से एक अनोखा नकशा यहाँ जमा दें ॥
हो जुब्ब, खरका सोफा, पोशिश ब्राह्मणों की।
माथे पे हाजियोंके, केसर तिलक लगादें ॥
पढ़वायें कलमा उन से हिन्दूस्तां का अव्वल।

फिर वन्देमातरम् की आयत उन्हें सिखादें ॥
मक़सूद हो बुलाना जिस वक़्त हाजियों को ।
नाक़ोस क़ौमियत का खुश होके हम बजा दें ॥
दे २ के मुंह पे आये दुःखे वतन की छीटें ।
ख्वाबीदगान गफ़लत को पे फलक जगादें ॥
हिन्दूस्तां से हमको लाज़िम है प्यार करना।
क़ुर्बान जान इस पे परवाना वार करना ॥

रहेगा इस तरह पाबन्द ऐ हिन्दूस्तां कब तक ?

रहेगा इस तरह पाबन्द ऐ हिन्दूस्तां कब तक ?
सहेगा सख्तियों पे सख्तियां ऐ सख्त जां कब तक ?
तुझे मुद्दत हुई आगोश गफलत में पड़े सोते ।
ज़रा बेदार हो आखिर को यह ख्वाबे गरां कब तक ?
ज़माना बढ़ चला राहे तरक्की में मगर तेरी ।
यह रफ्तारे बेढंगी रहेगी मेहरबां कब तक ?
तुझे लाज़िम है उठकर अब खबर कुछ अपने घर की ले ।
रहे कोई तेरे गल्ले का बतला पासबां कब तक ?
बस अब हद हो चुकी कहदे तू यह फरमां रवाओं से ।
कोई झेले यह उनकी आय दिन की सख्तियां कब तक ?
मगर खामोश ऐ "हमदम" बड़ा नाज़ुक ज़माना है ।
रहेगा देखिये इस हाल पे दौरे ज़मां कब तक ?

अर्ज़ हाल ।

हिन्द वालो ख्वाब से बेदार होना चाहिये ।
छोड़ कर मुर्दा दिली होशियार होना चाहिये ॥
सनअतो हिरफत का अब बाजार ठंडा है पड़ा ।
गर्म फिर से इस जगह बाज़ार होना चाहिये ॥
रन्जो गम न पास आने पायें अहले हिन्द के ।
याल का हलका यहां मिस्मार होना चाहिये ॥
खिदमते कौमो मुल्क से होवे बस अपनी गर्ज़ ।
न कि हम को मुफ़सदो गद्दार होना चाहिये ॥
आशनाई हो मदाकन से मुल्क और कौम का ।
रास्ती का सच्चे दिल से यार होना चाहिये ॥
ताकि सोजे दिल मेरा मालूम हो लोगों को भी ।
'विशाक' की मरक़द पे एक विनार होना चाहिये ॥

गफलत को नींद छोड़ो हिन्दूस्तान वालो !

सुस्ती का जाल तोडो हिन्दूस्तान वालो ।
सर काहली का फोडो हिन्दुस्तान वालो ॥
नस्ता से रिश्ता जोडो हिन्दुस्तान वालो ।
कोशिश से मुंह न मोडो हिन्दुस्तान वालो !!
,गफलत की नींद छोडो हिन्दुस्तान वालो !!
वक्ते सहर है दुनिया खुशियां मना रही है ।

शाखे शजर पर बुलबुल भी गीत गारही है ॥
क्या भीनी २ खुश्बू गुलशन से आरही है।
देखो सबा चमन में क्या गुल खिला रही है॥
गफलत की नींद छोडो हिन्दुस्तान वालो !!
शबनम नहीं बिरादर कतरे जो बह रहे हैं।
हालत पे हिन्दके गुल आसू बहा रहे हैं॥
गुन्चो की आहो जारी है कब यह कहकहे हैं।
अलफाज बुलबुलो ने नालों में यह कहे हैं।
गफलत की नींद छोडो हिन्दुस्तान वालो !!
महदी अली से मुहसन तुम को जगा रहे हैं।
नौरोजी बनर्जी शाने हिला रहे हैं॥
घोश और मालवीय जी जीना सिखा रहे हैं।
बाल और लाजपत भी तुम को उठा रहे हैं॥
गफलत की नींद छोडो हिन्दुस्तान वालो !!
यौरुप के साहिबे फन तुम को बुला रहे हैं।
इङ्गलिश फ्रेंच जर्मन तुमको बुला रहे हैं॥
हुनर के मखजन तुम को बुला रहे हैं।
जाओ कि माल और धन तुमको बुला रहे
गफलत की नींद छोडो हिन्दुस्तान वालो !!
गफलत से हिन्द वालो हालत यह
औलाद है कि सूखे टुकडों को रोरही है॥

फाका कशी के हाथों यह जान खोरही है।
क्या सोरहे तुम भी किस्मत जो सा रही है॥
गफलत की नींद छोड़ो हिन्दुस्तान वालो !!
गफलत में मालो जर क्या इज्जत भी जा चुकी है।
शोहरत भी मिटगई है अजमत भी जाचुकी है॥
हिकमत चली गई है हिम्मत भी जाचुकी है।
हिरफत कहां है बाकी सनअत भी जा चुकी है॥
गफलत की नींद छोड़ो हिन्दुस्तान वालो !!
छोड़ो यह दिलकी पस्ती गफलत की नींद छोड़ो।
है गर ख्याल हस्ती गफलत की नींद छोड़ो॥
बेदारी अब है सुस्ती गफलत की नींद छोड़ो।
कबतक रहेगी मस्ती गफलत की नींद छोड़ो॥
गफलत की नींद छोड़ो हिन्दुस्तान वालो !!
लूटा है गफलतों ने हिन्दुस्ता तुम्हारा।
सहरा सा बन गया है रश्के जिनां तुम्हारा॥
बरबाद होरहा है यह गुलिस्ता तुम्हारा।
मिटने को है जहां से नामो निशां तुम्हारा॥
गफलत की नींद छोड़ो हिन्दुस्तान वालो !!
अब इमत्याजे मजहब ऐ दोस्तो भुलादो।
नकशे दुई का दिलसे नामो निशा मिटादो॥
गफलत से पड़गये हैं जो परदे उन्हें हटादो।

फिर एकबार होके शीरो शकर दिखादो ॥
गफलत की नींद छोडो हिन्दुस्तान वालो !!
गुलचीं तुम्हारे अहले ईजाद होरहे हैं।
शागिंद थे फलक जो उस्ताद होरहे हैं ॥
जापानो चीन वाले सब शाद होरहे हैं।
कैदे गमो अलम से आजाद होरहे हैं ॥
गफलत की नींद छोडो हिन्दुस्तान वालो !!

यादे वतन

सख्तियां ये फलक पीर बहुत भेल चुके।
खेल जो तुझ को खिलाने थे वह सब खेलचुके ॥
कैदो पाबन्दी में हम काट बहुत जेल चुके।
बेलने वाले भी पापड़ हैं बहुत बेलचुके ॥
लाखो सदमे सहे आवारा औ बरबाद रहे।
नीमवहशी रहे नाशाद रहे नाशाद रहे ॥
गरदिशे चरख ने क्या क्या न दिखाये सदमे।
तिन नये दाम में फस कर हैं उठाये सदमे ॥
राहतें हमने दीं पर बदले में पाये सदमे।
कदर की हमने कलेजे से लगाये सदमे ॥
चहचहाते रहे फरियादो फुगां के बदले।
मौसिमे गुल ही समझ रक्खो खिजां के बदले ॥

बाग जन्नत से भी पुर लुफ चमन अपना है।
खुल्द अपना है यह गुल जारे वतन अपना है॥
हमपर अर्श मोअल्ला यह अदन अपना है।
जान अपनी है यही और यही तन अपना है॥
गैर मुमकिन है कि हम अपना वतन भूलसकें।
और गैर भूलें तो मुमकिन नहीं फलफूल सकें॥
शाद हों किस तरह जब तक कि वतन शाद न हो।
कैसे आजाद हों जब तक कि वतन आजाद न हो॥
या खुदा इस तरह कोई कहीं बरबाद न हो।
अपनी अजमत भी गुजश्ता यह जिसे याद न हो॥
डाल नैरंगें जहां आंखों में यूं धूल गये।
सूझ हमको न पड़ा अपना वतन भूल गये॥
शुक सद शुक कि गुलशन में बहार आई है।
एक नये ढब से हुई फिर चमन आराई है॥
बात फिर तह की बड़ी फ़िक्र से यह पाई है।
साहब होश है जो कौम का सौदाई है॥
सर वह सर ही नहीं जिस में नहीं सौदाये वतन।
दिल वह दिल ही नहीं जिसमें कि नहीं जाये वतन॥
हमने आलम में तमद्दुन की बिना रक्खी है।
कोई ईजाद किसी से न छुपा रक्खी है॥
बात कोई न भलाई की उठा रक्खी है।

सलफते गैर भी भाई से सिवा रक्खी है ॥
हुक्मरां हम रहे दुनियां में कि महकूम रहे ।
एक दिलावर रहें सच्चे रहे मासूम रहे ॥
होश फिर हमने सभाला सभलने के लिये ।
कमर बस्ता नये दौर में चलने के लिये ॥
पैर आगे नहीं रक्खे गये टलने के लिये ।
दिल में बेचैन थे अरमान निकलने के लिये ॥
माल अपना रहे काबू में हो दौलत अपनी ।
है वतन अपना तो इस में हो हुकूमत अपनी ॥
आलम हो रगे वफा जोरे जफा के बदले ।
दिल में तसकीन हो फिर हिर्स वो हवा के बदले ॥
हम पियें आबे वफा जामे फना के बदले ।
ताज का साया रहे जल्ले हुमा के बदले ॥
रात दिन कौम की खिदमत करें दिलशाद रहें ।
इस गुलामी के गमो रंज से आज़ाद रहें ॥
कौम के हाथों में जो कौम की तालीम रहे ।
सब के हक बख्शते रहें हकों की वह तकसीम रहे ॥
कायदे वह हों नफिर हाजते तरमीम रहे ।
हो न तहसीन तास्सुब से वह न तरमीम रहे
कुछ नहत्थे न हो और कुछ लिये हथियार न हों ।
एक स खुश नहीं और एक से बेजार न हों ॥

फर्ज अपना है यही हम न वतन को भूलें ।
शर्म की जा है जो अगलों के चलन को भूलें ।
अब हम और के लिये इल्म को फन को भूलें ।
है तअज्जुब जो चमन जाद चमन को भूलें ॥
मुल्क के वास्ते हो जोशे मोहब्बत हम में ।
जान भी जाये तो बस जाये वतन के ग़म में ॥

शैदाये वतन

हम भी दिल रखते हैं सीने में जिगर रखते हैं ।
इश्क़ो सोदाये वतन रखते हैं सर रखते हैं ॥
माना न ज़ोर ही रखते हैं न ज़र रखते हैं ।
वलवले जोश की मोहब्बत का मगर रखते हैं ॥
किंगुरा अर्श का आहों से हिला सकते हैं ।
खाक में गुम्बदे गरदूं को मिला सकते हैं ॥
शौक जिनको है सताने का सतायें आयें ।
दूबदू आके हों, यूं न मुंह छिपायें आयें ॥
देख लें मेरा वफा आयें, जफायें आयें ।
दौड़कर लूंगा बलायें मैं बलायें आयें ॥
दिल वह दिल ही नहीं जिस में कि मरा दर्द नहो ।
सख्तियाँ सब से झेले न जो वह मर्द न हो ॥
कैस हैं पर किसी लैला के गिरफ्तार नहीं ।

काहकन है, किसी शीरीं से सरोकार नहीं॥
ऐसी बातों से हमें उन्स नहीं प्यार नहीं।
हिज्र के वस्ल के किस्से हमें दरकार नहीं ॥
जान है उसकी पला जिससे यह तन अपना है।
दिल हमारा है बस उसमें वतन अपना है॥
यह वह गुल है कि गुलों का वकार इससे है।
चमने दहर में एक ताजा बहार इससे है॥
गुल बुले दिल को तसल्ली वो करार इससे है।
बन रहा गुलचीं के नजरों में यह खार इससे है॥
चर्ख कज रफ्तार के हाथों से बुरा हाल न हो।
यह शिगुफ्ता रहें हर दम कभी पामाल न हो॥
आर्जू है कि उसे चश्म से जरसे सीचें।
बन पड़े गर तो उसे आबे गुहर से सीचें॥
आबे हैवा न मिले दीदये तरसे सींचें।
आपड़े वक्त तो बस खूने जिगर से सीचें॥
हड्डिया रिजके हुमा बन के न बरबाद रहें।
गुल के मिट्टी में मिले खाद बनें याद रहें॥
हम सितम लाख सहें शायके बेगार रहें।
आहे थामे हुये रुके हुये फरियाद रहें॥
हम रहें या न रहें ऐसे रहें याद रहें।
इसकी परवाह है किसे शाद कि नाशाद रहें॥

हम उजड़ते हैं तो उजड़े वतन आज़ाद रहे।
हों गिरफ्तार तो हों पर वतन आबाद रहे॥

फरियाद भारत

कश्तिये हिन्द को तूफाँ से बचाये कोई

गैर सूरत है मेरी देखने आये कोई।
कौन है ? किस्सये गम किस को सुनाये कोई॥
कहती है रोके हर एक से यह भारत माता।
मुझको कमजोर समझ के न सताये कोई॥
दूध बचपन में सपूतों को पिलाये मैंने।
अब बुढापे में दवा मुझको पिलाये कोई॥
जोफ ऐसा है कि चलने में गिरी जाती है।
दोनों हाथों से मुझे आके उठाये कोई॥
मैंने बिगड़ी हुई किस्मत को बनाया सब की।
मेरी बिगड़ी हुई तकदीर बनाये कोई॥
शक यह बहरे हवादिस से न हो जाये कहीं।
कश्तिये हिन्द को तूफाँ से बचाये कोई॥
यह ज़माने की है खूबी यह मुकद्दर की है बात।
चैन से सोये कोई चैन न पाये कोई॥
नाज बचपन में उठाये हैं हर एक के मैंने।

अब जईफ़ी में मेरा बार उठाये कोई ॥
ख्वाबे गफ़लत में पड़े सोते हैं सब अहले वतन ।
होश में लाये कोई इन को जगाये कोई ॥

दुनिया की कुफ़लतो से छोड़ूं न देश सेवा

ईश्वर मैं देश सेवक संसार में कहाऊं ।
प्यारे स्वदेश पर मैं बलिदान हो हो जाऊं ॥
सिर पर हिमालया है चरणों में है समन्दर ।
भागीरथी सी प्यारी नदियां कहां मैं पाऊं ॥
दुनियां की कुलफ़तों से छोड़ूं न देश सेवा ॥
सर पर अजल खड़ी हो, प्रिय देश देश गाऊं ॥
जिस आबो गिल का पुतला उस गिल के काम आऊं ।
मर कर भी हो तमन्ना भारत में नाम पाऊं ॥
दैरो हरम का झगड़ा भारत से मैं मिटाऊं ।
प्रायाग बन के दिल में गंगा यमुन मिलाऊं ॥
गर मुझ से पूछे कोई नामो निशान मेरा ।
हिन्दू कहूं न मुस्लिम मैं भारती बताऊं ॥
नफरत से मुझ को नफरत होजाये अब खुदारा ।
छोटा बड़ा भुलाऊं सब को गले लगाऊं ॥
सैराब फिर से करदूं उजड़े हुये चमन को ।
चश्मों से अपने चश्मा मैं प्रेम का बहाऊं ॥

मेरी जिन्दगी का मकसद कुछ होतो बस यही है।
बरतानिया के साये में पूरण स्वराज्य पाऊं ॥
मुझ धुल धुले वतन को लेजाये गर कफ़न में।
गुलशन का अपने दिलकश नगमा वहां सुनाऊं ॥
सारे जहां को तेरा शैदा बनाऊं 'शादां'।
य राग तेरा भारत कुछ ऐसी लय में गाऊं ॥

दिली उमंग

अगर जिन्दा रहा तो दुनिया को दिखादूंगा।
कि किस का नाम है हुब्बे वतन सब को सिखा दूंगा ॥
न बिल्कुल पालिसी से काम लेने का हूँ मैं कायल।
यह मकारी है हर एक खानये दिल से मिटा दूंगा ॥
खुशामद में कभी सीखा नहीं इन्सान की करनी।
सिदाकत पर बिला शक हां मगर सिर को कटा दूंगा ॥
खुशामद उनको भाती है जिन्हें है सर्वथा मतलब।
सरासर है कमीना पन यह मैं उनको जितादूंगा ॥
चमन जो कौम का अपने है मुरझाया हुआ बिलकुल।
मैं उसको चश्मतर से सींच कर गुलशन बनादूंगा ॥
मेरा गर नाम चाहे कोई भी तहरीर में लाना।
मैं एक कोमी दीवाना हूं यह नाम अपना लिखादूंगा ॥

एक कौम परस्त की ख्वाहिश

कबतक हुदा मरी फिर अपना वतन न होगा।

हिन्दोस्तां कभी क्या रश्के चमन न होगा ?
भारत में लाल ऐसे पैदा हुये हों जिनसे ।
कीमत में बढ़के कोई लाले यमन न होगा ॥
होंगे हजारों पैदा दुनियां में लोग खुशगू ।
गोपाल कृष्ण सा पर शीरीं सखुन न होगा ॥
दुनियां के दुःख झेले पर राम को न छोड़ा ।
भाई का भक्त कोई मिस्ले लखन न होगा ॥
उस वक्त तक न छोड़े दाम बेकसी से ।
जब तक कि भारतियों का एक मन न होगा ॥

तरानये इत्तहाद

जन्नत की दीद से है दिल शादमां हमारा ।
"शुक्रे खुदा वतन" है हिन्दुस्तां हमारा ॥
रौशन है जौहरी पर मोती की कदरो कीमत ।
तारीख दाने आलम है कदरदां हमारा ॥
कहते हैं हम को हिन्दी हुब्बे वतन है ईमां ।
क्या पूछते हो दीनो नामो निशां हमारा ॥
आलाम मुसलमां पे बोले तड़प के हिन्दू ।
सूदो जया है उनका सूदो जया हमारा ॥
देखा है हम को मिलके गंगो यमन की सूरत ।
शादाब होके हसता है गुलिस्तां हमारा ॥

होजाये काश साबित कहीं की कूचा गर्दी ।
बन जाय काश गांधी हर नौजवां हमारा ॥
काफी है तेगे फोकी दुनियां के फूकने को ।
नारे अलम हमारी दर्दे फुगां हमारा ॥
जां से बदन से खू से हिन्दुस्तां के हैं हम ।
हैरत है क्यों नहीं है हिन्दुस्तां हमारा ॥
दहशत से होंगे औंधे सारे जहां के झंडे ।
होगा बलन्द जिस वक्त मुल्की निशां हमारा ॥
कोहे गरां झुकेंगे बहरे रवां रुकेंगे ।
अच्छा हो हो न जाहिर जोशे निहां हमारा ॥
टूटेगा कुल तिलिस्म अग्यारिये अजाबत ।
अच्छा है गर न टूटे कुफ्ले दहां हमारा ॥
बोझें वफा से होंगे हम कामरां यकीनन ।
आदिल है फैज़ गुस्तर है हुक्मरां हमारा ॥

फरियादे भारत

कहां है वह मेरा दम खम, कहां ताबो तवां मेरी ।
गनीमत है जो बाकी है बदन में हड्डियां मेरी ॥
बहू ताजीम खम करते थे अपना सिर मेरे आगे ।
शाहशाहे जहां तक चूमते थे आस्तां मेरी ॥
बजा था हर तरफ दुनिया में डंका मेरी ताकत का ।

चमकती थी जमाने में कभी तेगे सिना मेरी ॥
निगहबां धर्म था मेरा जबां वेदों की बानी थी ।
वफ़ा थी राजदां मेरी हुई थो पासबां मेरी ॥
गया वह दौर, दौरा दौरये वख्ते जवू आया ।
उड़ा दीं गरदिशे चीरे, फ़लक ने धज्जियां मेरी ॥
नहीं अपना रहा कुछ पास मेरे सब है गैरों का ।
गिज़ा मेरी मेरा फैशन चलन मेरा जबां मेरी ॥
फफोले दिल में पड़ते हैं झुलसती है जबां मेरी ।
अजब किस्मत है अपना निराली है दास्तां मेरी ॥

क्या करूं ?

रोती है दिन रात अपनी चश्म तर को क्या करूं?
एक नया सौदा समाया हाय सिर को क्या करूं?
पांव से बदतर समझती है मुझे दुनियां अगर ।
धन्वा परधर "ए साहिब" या कि "सर" को क्या करूं
है जहां तजलील अपनी और दुत २ की सदा ।
आप ही बतलाइये फिर मैं उधर को क्या करूं?
गर मिली इज्जत न दुनियां में तो फिर किस काम के ।
कोई बतलाये कि मैं इस ज़ोरोज़र को क्या करूं?
चापलूसी करते गुज़री है यह सारी जिन्दगी ।
है दिखावा ही फ़कत इस कर्रो फ़र को क्या करूं!

चैन पाता ही नहीं पाता नहीं जब तक कि स्वराज।
हाय दिल को क्या करूं अपने जिगर को क्या करूं?

तेरोनये इत्तहाद

चरचा है हिन्द वाले बेदार होगये हैं।
मुद्दत के बाद गाफिल होशियार हो गये हैं॥
हर एक के दिल में भरगया है जोशे वतन परस्ती।
सब मुल्क की मदद को तय्यार होगये हैं॥
हिन्दुस्तां की कौमें आपस में मिल रही हैं।
फिर एक दिली के पैदा आसार होगये हैं॥
यह हिन्दू और मुसलमां जो कल जुदा २ थे।
आज एक दूसरे के गमख्वार होगये हैं॥
दोनों यगांनगत के नारे लगा रहे हैं।
दोनों मुगायरत से बेजार होगये हैं॥
क्या शेख क्या ब्राह्मण क्या मौलवी औ लाला।
सब एक ही नशे में सरशार होगये हैं॥
सद शुक्र भाई २ शीरो शकर बने हैं।
बिछुड़े हुये मिले हैं रूठे हुये मने हैं॥
शाबाश हिन्द वालो उलफत बढ़ाये जावो।
परदा जो दर्मियां है उसको उठाये जावो॥
इस इत्तफाक में है अजमत का राज़ पिन्हां।

इस राज़ को समझ लो रन्जिश मिटाये जावो ॥
गर हिन्द आस्मां है तुम उसके हो सितारे ।
पहलू ब पहलू अपना जलवा दिखाये जावो ॥
हम हिन्दू और मुसलमां एक दिल हैं एक जां हैं ।
यह दिल फरेब नगमा हर वक्त गाये जावो ॥
कोशिश करो कि दुनिया इज्जत करे तुम्हारी ।
खुलके खुदा के दिल पे सिक्का जमाये जावो ॥
हिम्मत के काम करके आलम को दंग करदो ।
सारे जहां में अपना डंका बजाये जावो ॥
अल्लाह करे मुबारिक यह इत्तिहाद तुमको ।
हासिल हो अज़्द अपने दिल की मुराद तुमको ॥

शहीद कौम

वह शहीद तेगे जफा हूं मैं जिसे आस्मां ने मिटा दिया ।
मेरे मुंह से निकली न आह तक मुझे गोलियोंसे उड़ा दिया ॥
वह बहाई खून की नदियां कि पुकारी अर्श भी अल अमां ।
वह पलट पलटके सितम किये कि "हलाकू खां"को भुला दिया
हमी जानिसार हैं हिन्द के हमी दिलफिगार हैं हिन्द के ।
हमे पास मेहरो वफा का है उन्हें जादे के दिखा दिया ॥
कोई बैठकर न संभल सका कोई दौड़ कर न उछल सका ।
यह सपूत पाठे जवान ये तहे खाक जिनको मिला दिया ॥
कोई कुश्ता कुश्ते पे बेकफन कोई लोट पोट था खस्तातन ।

जो किसीमें बाकी रमक भी थी तो पलटके चर्का लगा दिया॥
भला कौन करता था इक रसी कि सिरहाने रोती थी वेकसी
जिसे चाहा उसको दवा दिया जिसे चाहा उसको जला दिया॥
न सुनी किसी की शिकायतें बयान करते किससे हिकायतें।
की जो हिम्वतों ने च् चिरा उन्हें मार्शलला सुना दिया॥
यही लोग नाज़ में थे पले जो गलों में पेट के बल चले।
पड़ी मार कोड़ों की इस कदर कि तमाम जिस्म सुजा दिया॥
वह यतीम करते हैं जारियां कि नसीब जिन को हैं खारियां।
वह घरों गाती हैं नारियां जिन्हें हाय ! वेवा बना दिया॥
यहां सबको आन का बीम है यहां मानटेगू स्कीम है।
न तो सब्र है न करार है यह बताओ तो हमें क्या दिया॥
उन्हें यादरखना "खलीक"तुमकभी दिलसे करना न इनकोकम
यह शहीद कौम के लाले हैं जिन्हें इकने इतना बढ़ा दिया॥

होम रूलो मर्ज़ के ऐ सोज बीमारों मे हूं

कौन कहता है कि मुफ़सद हू मैं गद्दारों में हू।
शाकमों बन्दा खुदा का हू खुदा शैदा में हू॥
है वतन अपने की उलफ़त,दिलो जिगर में पर मगर।
साथ ही मैं शाह अपने के वफ़ा दारों में हूं॥
हूं सताया उलफ़ते हुब्बे वतन का ए शहा!
वरना मैं बागी हू मुफ़सद हू न गद्दारों में हू॥

खुर्द परस्ताने जहां की आंख का शहतीर हूं ।
इन सितमगर बेवफाओं के मैं बीमारों में हूं ॥
चाहता हूं दिल से तेरा दीदार हो मुझको नसीब ।
पर मेरी किस्मत यह कहती है कि लाचारों में हूं॥
हूं शहशाह दिल का अपनी कुल जहां जागीर है ।
देखने वालों की नजरों से मैं नादारों में हूं ॥
हर तरह से खुश हूं मैं आजाद और बेफिक्र हूं ।
होमकली मर्ज के पर सोज बीमारों में हूं ॥

हेच हैं सब नियामतें हासिल गर आजादी नहो।

सिर नगू था फर्त गम से कल कराये शाम में ।
कर रहा था शिकवये बेमहरिये अय्याम में ॥
उड़ती इस आलम में एक चिड़िया नजर आई मुझे ।
दिलसे उसके उड़ने फिरने की अदा भाई मुझे॥
उड़ती फिरती थी हवा में वह अजीब अन्दाज से ।
शाने आजादी अयां थी शौखिये परवाज से ॥
करती फिरती थी तलाशे आबो दानां चार सू ।
उड़ती फिरती थी उसीकी जुस्तजू में चार सू ॥
आन बैठी इस तरह आखिर यकायक मेरे पास ।
रन्जो नाकामी से हो जैसे किसी का दिल उदास ॥

मैंने पूछा उससे तू अफसुर्दा दिल है किस लिये।
ऐसी गमगीं और इतनी मुज्महिल है किस लिये॥
मुब्तलाये रञ्ज चश्मे यासो हिरमां क्यों है तू।
यों तलाशे आबोदाने में परेशां क्यों है तू॥
मेरे पास आजा तेरी सूरत मुझे मरगूब है।
मैं बहम कर दूंगा जो कुछ भी तुझे मतलूब है॥
दिल कुशा पिंजरा तेरे रहने को बनवाऊंगा मैं।
तुझको जितनी नियामतें दरकार हैं लाऊंगा मैं॥
चोगा अपने हाथ से खाने को दूंगा तुझे।
फिक्र आबो दाना से आजाद कर दूंगा तुझे॥
हूंगा तेरे चहचहाने से बहुत महजूज मैं।
तुझको रक्खूंगा मलाले दहर से महफूज मैं॥
कहके ये मैंने बढ़ाया हाथ जब उसकी तरफ।
उड़ गई झट देखकर नफरत से वह मेरी तरफ॥
यह थी नफरत दहशत आमेज और था मतलब इसका यह—
हेच हैं सब नियामतें हासिल गर आजादी नहीं॥

पोलिटिकल कैदियों के दिली जज़्बात

खुश होश के मूंज कटेंगे चक्की चलायेंगे।
बल्कि कुधा सराश खुशी से मिटायेंगे॥
जन्दां की कच्ची रोटियां खुश हो के खायेंगे।
और अध भुने चने भी खुशी से चबायेंगे॥

दर्दो महन में फस के न गरदन झुकायेंगे ।
मूछों पे ताव देंगे अकड़ भी दिखायेंगे ॥
रोयेंगे बुजदिली से न आंसू बहायेंगे ।
हम रंजो बेकसी में भी हिम्मत दिखायेंगे ॥
रन्जो गमों अलम में भी खुशियां मनायेंगे ।
सख्ती तमाम झेलेंगे कड़ियां उठायेंगे ॥
खुद सह के ज़ुल्म ज़ुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
भारत की हाल जार को बेहतर बनायेंगे ॥

तरानये मोहब्बत

तम्लुक मुल्क पर हो कौम पर अपनी फिदा हो जा
नहीं है वक्त सोहत जाग और जल्दी खड़ा होजा ।
हमा तन महवआज़ बहरे हुसूले मुद्दआ होजा ॥
अगर ख्वाहिश है तेरा नाम हो सफ़हाय मर्दों में ।
तसुद्दक मुल्क पर हो कौम पर अपनो फिदा होजा
मिटा हर्फे गलत की तरह तू सीने से नाचाकी ।
न रख आपस में बैर और मिस्ले आइना सफा होजा
भुला दे शिकवये देरीना मिल मुद्दत से बिछुड़ों को ।
मदावा बन किसी के दर्द का दर्द आशना होजा ॥
इलाजे दर्द दिल हम दर्दी अबना में मुज़मर है ।
सरापा दर्द बन फिर सबके दर्दों की दवा होजा ।

तमन्ना है अगर कुछ गौहरे मकसूद हासिल हो ।
फलाहे मुल्क पर कुर्बान होजा और फना हो जा ॥
पकड़ सब्र यार इस्तकलाल से शमा हिदायत को ।
अंधेरी रातका कुछ गम न खा तू रहनुमा होजा ॥
बदल करवट जरा तू भी जमाना सारा बदला है ।
तमाहुन छोड़ दे और तूभी आतिश जेरपा होजा ॥
बना से बन सके जो कुछ ही है दौरे जदीद आया ।
ख्यालाते कुहन को छोड दे तू भी नया होजा ॥
न हो हिन्दू को मुसलिम से न मुसलिम को हिन्दू से ।
कुदूरत छोड दे वह भी इधर तूभी सफा हो जा ॥
न तेरे कान हरगिज आशना हो फर्के मिल्लत से ।
कमर बस्ता बराय खिदमते अहले-वफा होजा ॥
मुसलमां है तो तू कशका लगा माथे पे चन्दन का ।
ब्राह्मण से शिवाले में, तू जाकर हम नवा होजा ॥
ब्राह्मण है तो जा मस्जिद में जाकर जब्बी साई कर ।
मुसलमानो से हम आहंग तू बहरे दुआ होजा ॥
झुकाने शर्म है गैरों के दर पर हो तू उफ्तादा ।
सलाहीत नह ले खुद अपनी बातों पर,खडा होजा ॥
तुझे यह तो खबर है एक दिन आखिर को मरना है ।
किसी के सिर पे चढ़ के मर किसी पर तू फिदाहोजा॥
इधर गांधी उधर नहेरू इधर हसरत उधर आजाद ।
इन्हीं के नक्श पा पर चल कि मिस्ले नक्शे पा होजा ॥
वतन की लाजपत रखले अगर मनजूर शौकत है ।

उदू की सफ का सफ्दर बन के यूं मुश्किल कुशा होना।
ज़फर हासिल हो फिर दुनियां में, 'आजिज़' नाम तेरा हो।
यही है जिन्दगानी इस तरह अन्जाम तेरा हो ॥

मेरा कसूर यह था कि मैं बे कसूर था

मैं अपने प्यारे हिन्द की उलफत में चूर था।
अग्यार समझे दिल में कि इन से लकूर था ॥
मैं इनके वारे लुत्फ से बचता था हर घड़ी।
गोज़ेर बार मन्नत खवेशा जरूर था ॥
कहता था दिल की बात मैं मुंह पर खरी खरी।
हा किज्ब और दरोग खुशामद से दूर था।
आता न था सलाम को हुक्काम बक्क के।
लाता न लबपे भूले से भी जी हुजूर था॥
देता था उनकी ईंट से पत्थर से मैं जवाब।
गैरत थी मुझ में और मैं कद्रे गयूर था।
इतने पे पस हमेशा रहा मूरदे अताब।
मेरा कसूर यह था कि मैं बेकसूर था॥

कौमी इत्तिहाद

फखरे वतन हैं दोनो और दोनों मुकतदर हैं।
हैं फूल इक चमन के एक नख्लके समर हैं ॥
ऐ कौम तेरे दुख के दोनों ही चारागर हैं।

दोनो जिगर २ हैं लेकिन दिगर २ हैं ॥
आपस के तुफुर्क़ों से हैं आह ! ख्वार दोनो ।
अग़्यार की नजर में हैं बे वकार दोनो ॥
मिल कर चलो कि आख़िर दोनो हो भाई २ ।
भाई से क्या लड़ाई भाई से क्या बुराई ॥
कब तक यह खाना जङ्गी कब तक यह खुद सताई ।
जे़बा नहीं बड़ों को यह और ख़ुद नुमाई ।
मिल कर गले निकालो दिल का ग़ुबार दोनो ।
इक ख़ाक के हो पुतले पायान कार दोनो ॥
तांचन्द यह फ़िसाने गम हाय मुत्तसिल के ।
ग़ैरों को क्या दिखाते हो दाग़ अपने दिल के ॥
आये हुये हैं पहलू में जख़्म आह छल के ।
हो जाय पार कश्ती कोशिश करो जो मिल के ॥
बरपा है शोर तूफ़ां हो होशियार दोनो ।
करदो भवर से क़ौमी बेड़े को पार दोनो ॥
रश्के जिना बनाओ हिन्दुस्तां को मिलकर ।
खूने जिगर से सींचो इस गुलसितां को मिल कर ॥
लहरावो आसमा पर क़ौमी निशान मिलकर ।
दो आवेज़ां नसारों नोके सिना को मिलकर ॥
मैदाने नद्दोजहद के हो शहसवार दोनो ।
हुब्बे वतन पे करदो दिल का निसार दोनो ॥

वतनपरस्तों का शिवाला यानी बाग जलियांवाला

गिरा है खून यहीं कौम के शहीदों का।
फना हुआ है यहाँ दम सितम रसीदों का ॥
हुये है गर्क लहू में वतन के लाल यहीं।
चमन हुआ मुरादों का पायमाल यहीं ॥
यहीं पड़ा है यहीं खेत बेगुनाहों का।
लुटा है काफिला दिन दिहाडे वादे ख्वाहों का ॥
यहीं चली हैं गोलियां निहत्थों पर।
कि आग बरसी है आतिश फिशां निहत्थो पर ॥
यहीं निकाले है अरमान दिल के डायर ने।
कि भाड़भून दिया बेपनाह फायर ने ॥
गिरे हैं गोलियां खाकर यहीं जवां अफसोस।
तड़प २ के हुये सर्द नौजवां अफसोस ॥
यहीं की खाक से रंग शफक है शरमिन्दा।
यहीं के जर्रों से मेहरे-उफक है शरमिन्दा ॥
वफा शआरों पे टूटा है क्या सितम हेहात।
यह आती है दरो दीवार से सदा दिन रात ॥
यह वह जगह है जियारत गाहे ख्वास है अब।
यह वह है हिन्द में मशहूर जिसका नाम है अब ॥
यहीं की खाक ने जर्रों पे है शर्फ पाया।
कि रंग खून शहीदां है सर बकफ आया ॥
यह अब वह पहिला सा जलियां वाला बाग नहीं।

वतन परस्तों का है यह ख़ियाला बाग़ नहीं ॥

हम आन न छोड़ेंगे हां जान गंवादेंगे

क्या चीज़ हैं हम एक दिन दुनियां को बतादेंगे।
फिर दबदबा पहिला सा आलम को दिखा देंगे॥
हां! तोसिने हिम्मत की गर बाग उठा देंगे।
उस पार ही पहुंचेंगे जब एड़ जरा देंगे॥
वहदत के हैं हम बानी जन्नत के हम हैं मालिक।
पूछेगा कोई आकर, हम खूब सिखादेंगे॥
तहज़ीब ज़माने में फैलाई हमीं ने है।
दावा है कि वहशी को इन्सान बनादेंगे॥
यूनानी हों या मिस्री शागिर्द हमारे हैं।
उस्ताद के हक को यह क्या दिल से भुलावेंगे॥
हम बादये इर्फां के मतवाले हैं ऐ साकी!
अल्लाह को देखेंगे जब रंग जमावेंगे॥
हम सुलह के जोया हैं और सबर ही शेवा है।
देखो न हमें छेड़ो हम हशर उठा देंगे॥
क्यों व्यर्थ जगाता है सोते हुये फितने को।
गर ख़्वाब से हम चौंके आलम को हिला देंगे॥
हां और अभी तक है खामोश हैं हम जबतक।
गर जोर पे आयेंगे तो धूम मचादेंगे॥

कब तक न हमारी इन आहों का असर होगा।
रोने पे गर आये तूफान उठादेंगे ॥
गो लाख मुसीबत हो इफलास की हालत हो।
हम आनन छोड़ेंगे हां जान गंवा देंगे ॥
जब कौम को देखेंगे जजबे से हुई खाली।
नजमें तेरी ओशोली यह याद सुना देंगे ॥

सुर्ख था कूचा गली और सुर्ख था बाजार भी

कौम भी जीती रहे जीते रहें अगयार भी।
दर्द भीकायम रहे कायम रहे बीमार भी॥
रंजो गम आये सितम बढ़ता रहे दर्दो अलम।
आशिको ! गम ख्वार होते हैं भला दिलदार भी ॥
देखलेहालत हमारी इन दिनों बरतानियां !
क्या हिशे गम में हमारे चुभ गये हैं खार भी ॥
कह रहे हैं आशिकाने हिन्दयों इङ्गलैंड से।
काटले सिर या हमें तू बख्श दे तलवार भी ॥
वक्त पर दी जान और ईमान तक सिदका किया।
हम लुटा बैठे हैं तेरी राह में घर बार भी ॥
कल गिरा जो खून था उसके निशां बाकी हैं आज।
सुर्ख था कूचा गली औ सुर्ख था बाजार भी ॥
इत्तफाके हिन्द पे नाजां नहो इतना नसीम।
हैं यहां पे यार भी और हैं यहां अगयारभी ॥

हिन्दियों का मौजूदा फोटु

सैदे शिकस्ता पा हैं वह हम यहाँ बशर हैं।
मायूमियों के नक्शे जीनत बने नजर हैं ॥
इतनी चढ़ी हुई है अपनी भी नोहा ख्वानी।
नगमा सराइयों से दुनिया के बेखबर हैं ॥
यां मांस है हमारा नश्तर से कम नहीं है।
फोड़े बने हुये दिल पक्के हुये जिगर हैं ॥
साया में जिनको रखा वो हो गये तवर-जन।
महरूम यार कहिये जिनको वह हम शजर हैं ॥
मन्जूर है मुकय्यद सारे हों फहमो दानिश।
इफलास की बदौलत मशहूर बे हुनर हैं ॥
परवाज क्या दिखायें किस तरह पर हिलायें।
हम खानये कफस में मुर्गे शिकस्ता पर हैं।
सुनता है कौन अपनी क्या दर्दे दिल सुनायें।
हक नाला मारता है हक आहे बे असर हैं ॥
कहते हैं अर्श पर भी अपनी ही रोशनी है।
कुछ काम कर दिखायें हम भी बशर अगर हैं ॥
बेदाद कर रहे हैं ये दाद कर रहे हैं।
ढूढ़े चिराग लेकर अब दाद गर किधर हैं।
हर शेर तीर हमारा हक तीर है जिगर फाड़।
खन्जर भरे हैं दिल में पहलू में नेश्तर हैं ॥

हरजा सराय मां हैं अशआर तेरे शैदा ।
समझेंगे नज्म तेरी जो साहिबे नज़र है ॥

हमवतन हैं इसलिये हिन्दू मुसलमां एक हैं

सब का खालिक एक है और सब का मालिक एक है ।
शिवाला मस्जिद और मन्दिर में खुदा सब एक है ॥
आयते कुरआन की और वेद मन्त्र यह कहें ।
चश्मे वीं हक के लिये तसबीह वो माला एक हैं ॥
अहले जाहिल गो बुरा माने मेरी इस बात का ।
अहले दिल के वास्ते हिन्दू मुसलमां एक है ॥
झगडे फिर हरगिज न हों वहम रहीमो राम के ।
जब कि कुदरत एक है और उसका कादिर एक है ॥
छोड दो ऐ दोस्तो मजहबी तास्सब छोड दो ।
हमवतन हैं इसलिये हिन्दू मुसलमां एक है ॥
गंगा जमुना की तरह मिल जावो दूई का निशान ॥
एक जहत एक दिल व यक जा हो के कह दो एक है ।
फिर से बागे वतन में वादे बहारी का हो दौर ।
बुल बुले हर शजर पर गायें कि गुलशन एक है ॥
यह दुआये 'नाज़' है यह चमन खुश फूले फले ।
हर जबां सब पे हो कि वतन अपना एक है ।

नगमये इत्तिहाद

आओ रिश्ते जोडलें मुद्दत से हैं टूटे हुये
आपसे तो दिल में है लेकिन हैं सब फूटे हुये ।

दिल में पहलू में मगर अफसोस सब टूटे हुये ॥
क्या गिला झूटे रफीकों का अगर दें वह दगा।
अक्स देते हैं कहीं भी आइने टूटे हुये ॥
खुल गई अगयार की सारी मुलम्मा साजियां।
जोड़े जाते हैं कहीं वादों से दिल टूटे हुये ॥
अब कहां वह शानो शोकतहो गई मशरिक की गुम
कसर हैं वीरान सारे और चमन टूटे हुये ॥
हमने तो हकके वफादारी अदा सब कर दिया।
आप के वादे मगर जितने थे सब झूटे हुये ॥
होगयेहिन्दु मुसलमा गैरको क्यों रश्क है।
मिल रहे हैं भाई दो मुद्दतसे थे छूटे हुये॥
जब तलक खामोश हैं हम जुल्म करले आसमां।
कुछ मजा दिखलायेंगे,इक दिन यह दिल टूटे हुये॥
छोड़ दो आपस के झगड़े हो चुकीं रसवाईयां।
आओ रिश्ते जोडलें मुद्दत से हैं टूटे हुये॥
पड़गया नासूर दिलमें यह उठाये हैं अलम।
रिस रहे हैं आबले दिल के शजर टूटे हुये ॥

नेकों की पहिचान

आगमें पड़ कर भी सोनेकी दमक जाती नहीं।
काट देनेसे भी हीरे की चमक जाती नहीं ॥

सिल पे घिस देने से भी जाती नहीं चन्दन की बू।
फूलकी मिट्टीमें मिलकरभी महक जाती नहीं॥
टूट कर आता नहीं कुछ लाल की रंगत में फर्क।
तोड देने से भी मोती की दमक जाती नहीं॥
रंज में आता नहीं नेकों की पेशानी पे बल।
धूपकी तेजी से सब्जे की लहक जाती नहीं॥
आ नहीं सकती कटहरों में भी शेरों की दहाड़।
दस्त गुलचीं में भी गुन्चों की चटक जाती नहीं॥
खौफो खतरे में बदल सकती नहीं मर्दों की धुन।
अन्दलीबों की कफस में भी चहक जाती नहीं॥
साहबे हिम्मत नहीं देता मुखालिफ से कभी।
जोर से आंधी की आतश की भड़क जाती नहीं॥
नाराजन रहता है आफातो हवादिस में दिलेर।
बादलों में घिर के बिजली की कड़क जाती नहीं॥
मुल्क की उलफत का अजबा दिलसे मिट सकता नहीं।
कौम की खिदमत की ख्वाहिश पे "फलक" जाती नहीं॥

दुआ कीजिये की हों हिन्द में अब ऐसे बशर पैदा

करेगा इस जमाने में वही दिल कुछ असर पैदा।
बजुज खौफे खुदा जिस में न होगा कोई डर पैदा॥
तलाशे राह में निकलो गे जब तुम मस्तइद होकर।

जरूरत रहनुमाई की करेगी राह वर पैदा ॥
बहम देखे गले मिलते जा हिन्दू मुसलमां तो ।
खुशी से चश्म भारत में हुये दो अश्क तर पैदा ॥
यह है कानून कुदरत का कि जब बेदाद बढ़ जाये ।
तो हो जाता है फिर कोई न कोई दाद गर पैदा ॥
जुनां चेशाह लङ्का का सितम जब बढ़गया हद से ।
तो राजा रामचन्द्र जी हुये दशरथ घर पैदा ॥
सताया कंस ने जब रइय्यत और बुजुर्गों।
तो मथुरा में हुये थे कृष्ण बिलकुल बेखबर पैदा ॥
मुझ चुपके से तरज जिन्दगी गांधी की कहती है ।
लगे हैं हिन्द में होने फिर अगले से बशर पैदा ॥
तमन्ना दीद को दीदार का मूजिब नहीं होती ।
अगर शौके तमाशा है तो कर आंके नजर पैदा ॥
यह किसने कह दिया रोते नहो कोई शहीदों को ।
मुझे मरने तो दो होजायेंगे सौ नौहा गर पैदा ॥
जवां मरदों का रुतबा अहले दौलत से फजूं तर हैं ।
बजाये सीमो जरके कीजिये दिल और जिगर पैदा ॥
गजब है रूखा फीका खाके सोये इसके बाशिन्दे ।
कि हो जिस मुल्क में कसरत से घी और नमश कर ॥
हयाते जावदा जाने वतन पर जान देना जो ।
दुआ कीजे कि हो अब हिन्द में ऐसे बशर पैदा ॥

'गुबार' आराम से रहने की तुमको आरजू है तो।
अदावत दूर करो और मोहब्बत दिल में कर पैदा॥

गर स्वराज मिल जाय

हमारे दर्द कोई इलाज मिल जाये।
दवा हो ऐसी कि जिस से मिज़ाज मिल जाये॥
मरीजे गम पे-मसीहा की अक इनायत हो।
करे न वादा कयामत का आज मिल जाये॥
नहीं यह चाहते हम गैर के बने हाकिम।
नहीं हवस कि हमें तख्तो ताज मिल जाये॥
यहां तो फ़िक्र है बस पेट की पड़ी हर दम।
शिकम पुरी ही को पूरा अनाज मिल जाये॥
हैं सब से पीछे पडे दौड़ में तरक्की की।
बढ़ें हम आगे हमें गर स्वराज मिल जाये॥

पैगाम अरशद

दिलों में उलफत हो मादरे वतन की।
ऐ दावरे दो आलम चरचा हो इस सखुन की॥
सबा तू जाकर सारे जहां में कहना।
उलफत का हार पहिनो अच्छा यही है गहना॥
यही है गहना अच्छा यही है गहना।
महरूम तुमने हरगिज इस से कभी न रहना॥

मजहब और वतन

नही जायज किसी मजहब में बदख्वाहे वतन होना।
कि नादानी है शाखे आशियां पर आरा जन होना॥
जो लाला है रहे लाला जो नरगिस है रहे नरगिस।
जरूरी कुछ नहीं है नस्तरन को यासमन होना॥
इस अपनी २ रंगत में भी तुम जेबे गुलिस्तां हो।
नही जेबा बिखर कर वना, ताराजे कुहन होना॥
तुम आखिर फूलहो गुलशन के और गुलशन तुम्हारा है।
बहार उसकी यही है बस तुम्हारा अन्दाजन होना॥
कभी गुलदस्ता गर देखो तो यह भी देखना इसमें।
कि इक डाई पे है मौकूफ जेबे अन्जुमन होना॥
करो तुम खिदमते खाके वतन सब मुत्तफिक होकर।
नहीं दाखिल कुछ इस मुबहस में शेखो बरहमन होना॥
अभी फीरोज बाकी हैं बहुत सी गुफ्तनी बातें।
सबूत आमोज है लेकिन मुझे तूले सखुन होना॥

करनल वैजवुड से इल्तजा

मैंने करनल वेजवुड से की यूं जाकर इल्तजा।
पहिले लाजिम है कि अमृतसर को जायें आप भी॥
या गुलामों की जमीं पर आकर रक्खा है कदम।
सरको गोरे रंग के आगे झुकायें आप भी॥

'गुबार' आराम से रहने की तुझको आरज़ू है तो।
अदावत दूर करो और मोहब्बत दिल में कर पैदा।

गर स्वराज मिल जाय

हमारे दर्द कोई इलाज मिल जाये।
दवा हो ऐसी कि जिस से मिज़ाज मिल जाये॥
मरीजे ग़म पे मसीहा की अक इनायत हो।
करे न वादा कयामत का आज मिल जाये॥
नहीं यह चाहते हम गैर के बनें हाकिम।
नहीं हवस कि हमें तख्तो ताज मिल जाये॥
यहां तो फ़िक्र है बस पेट की पड़ी हर दम।
शिकम पुरी ही को पूरा अनाज मिल जाये॥
हैं सब से पीछे पड़े दौड़ में तरक्क़ी की।
बढ़ें हम आगे हमें गर स्वराज मिल जाये॥

पैगाम अरशद

दिलों में उलफत हो मादरे वतन की।
ऐ दावरे दो आलम चरचा हो इस सखुन की॥
सबा तू आकर सारे जहां में कहना।
उलफत का हार पहिनो अच्छा यही है गहना॥
अच्छा यही है गहना अच्छा यही है गहना।
मेहरूम तुमने हरगिज इस से कभी न रहना॥

मजहब और वतन

नहीं जायज किसी मजहब में बदख्वाहे वतन होना।
कि नादानी है शाखे आशियां पर आरा जन होना॥
जो लाला है रहे लाला जो नरगिस है रहे नरगिस।
जरूरी कुछ नहीं है नस्तरन का यासमन होना॥
इस अपनी २ रंगत में भी तुम जेबे गुलिस्तां हो।
नहीं जेबा बिगड़ कर बज़ा ताराजे कुहन होना॥
तुम आखिर फूल हो गुलशन के और गुलशन तुम्हारा है।
बहार उसकी घटा है बस तुम्हारा खन्दा जन होना॥
कभी गुलदस्ता गर देखो तो यह भी देखना उसमें।
कि इक जाई पे है मौकूफ जेबे अन्जुमन होना॥
करो तुम खिदमते खाके वतन सब मुत्तफिक होकर।
ख़ुदा को भी है भाता शेख़ो बरहमन होना॥
नहीं दाखिल कुछ इस मुबहस में शेखो बरहमन होना॥
अभी फीरोज बाकी हैं बहुत सी गुफ्तनी बातें।
सकूत आमोज है लेकिन मुझे दूले सखुन होना॥

करनल वेजवुड से इल्तजा

मैंने करनल वेजवुड से की यूं जाकर इल्तजा।
पहिले लाजिम है कि अमृतसर को जायें आप भी॥
या गुलामों की जमीं पर आकर रक्खा है कदम।
सरको गोरे रंग के आगे झुकायें आप भी॥

जलियां वाले बाग के दिल दोज मन्जर में जरा।
कान से सुनिये शहीदों की सदायें आप भी॥
रींग कर चलना पडेगा मारशलला है यहां।
कितना चलते हैं जरा चलकर दिखायें आप भी॥
नन्हे २ बच्चों के मानिन्द कोड़े खाइये।
नाक को मिट्टी पे रगड़ें गिड़ गिड़ायें आप भी॥
लोहे के पिंजरों में जब जायेंगे आयेगा मजा।
कैद होकर जेल के कुछ लुत्फ उठायें आप भी॥
कौम के शेरों के होकर हम-नवाए-नाज-आज।
जलियां वाला बाग की जय २ मनायें आप भी॥

स्वदेश वस्तु

इलाही गुल हो यह आज घर घर स्वदेश वस्तु ! स्वदेश वस्तु !!
पुकारें दिल से स्वदेशी होकर स्वदेश वस्तु स्वदेश वस्तु !!
भरा हुआ है जो दिल के अन्दर स्वदेश वस्तु स्वदेश वस्तु !!
निकालो जोशे दिली यह कहकर स्वदेशवस्तु स्वदेशवस्तु !
वतन के हम हैं वतन हमारा किसी का इस में नहीं इजारा।
कहेंगे हम जोश में बराबर स्वदेश वस्तु स्वदेश वस्तु !!
सहलका आलम में डालदेंगे खराबियां सब निकाल देंगे।
मचाके यह शुग़ वतनके लीडर स्वदेश वस्तु स्वदेश वस्तु!!
ओ शै किसीकी विलायतीहो तुम्हेजो मिलती रियायती हो !!

यह कहके उसको लगावो ठोकर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
जो जान लेन अजल भी आये वतन की उलफत नदिलसे जाये।
पसे फना भी रहे जबा पर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
लहू शहीदे वतन का बहकर यह रंग लाये वरोज महशर।
पुकार उठे जवान अन्जर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
चलादो कुछ ऐसा आज अफसू जमाना होजाय दिलसे मफतू
पढ़ादो सबको यह दोहा अन्तर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
अगर तरक्की की आरजू है जो मिलके चलने कि तुममें खू है।
तो कहदो सब एक जवानहोकर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
जहां में हुब्बेवतन का चर्चा इलाही होजाय आज ऐसा।
कि बच्चा २ पुकारे घर २ स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
भरो जो हुब्बे वतन के नारे तो चौंक उठें जमीं के फितने।
सदा यह देकर उठायें महशर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
मजातो जब है सिवाय स्वदेशी मिले न शै एक भी विदेशी।
फिरे यह हर एक कहता ताअर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
इसी न्वाहत का राग गावो यही बराबर जबा पे लावो।
हमारा प्यारा हमारा दिलबर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
जोकुछ पढोतुम यहीपढ़ो तुम जो कुछ कहो तुमयही कहो तुम
यही वजीफ़ा होआज सबका स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू॥
यही सदा मन्दरों में गूंजे यही हो गिरजा घरों में चर्चे।
यही हो गुल मसजिदोंके अन्दर स्वदेश वस्तू स्वदेश वस्तू

क्यों ओ गधे स्वराजकी तुझ को फिकर नहीं

कल एक गधेसे कर दिया मैंने यों ही सवाल ।
क्यों ओ गधे स्वराज्य का तुझ को फिकर नहीं।
सुनकर गधे ने यह कहा मुंह को जरा सम्भाल।
करता तू अपनी कौम का बिलकुल जिकर नहीं॥
अपने को छोड़ गैर पे जो जां निसार है।
हजरत! गधे से बढ़ कर है कौमी गद्दार है॥

आज़ाद होने का वक्त है

अपनी हिम्मत से बढ़ो क्या शोर है इमदाद का।
मुन्तजर हम से रहा जाता नहीं मीयाद का॥
ऐ असीराने कफस यह वक्त है इमदाद का।
सुनते हैं गुलचीं से झगड़ा छिड़ गया सय्याद का।
देके आज़ादी का लालच कर लिया मुझको असीर।
पूछते हैं हाल क्या उस बुल बुले नाशाद का॥
आवो मिल कर सब कफस की तोड़ डालें तीलियां।
जुल्म अब हमसे सहा जाता नहीं सय्याद का॥

तिलक

भाई बहिनों का भ्राता, लाल गंगाधर तिलक।
मादरे मुशफक का प्यारा बाल गंगाधर तिलक॥

मुल्क का रोशन सितारा बाल गंगाधर तिलक ।
हिन्द की आंखों का तारा बाल गंगाधर तिलक ॥
छोड़ कर हम को अकेला बाल गंगाधर तिलक ।
चल दिया आप को तनहा बाल गंगाधर तिलक ॥
बेचारों का सहारा बाल गंगाधर तिलक ।
बेबसों का वसीला बाल गंगाधर तिलक ॥
लुत्फ और रहमत का चश्मा बाल गंगाधर तिलक ।
प्रेम और उलफत का दरिया बाल गंगाधर तिलक ॥
आब गंगा का था दर्शन बाल गंगाधर तिलक ।
आब गंगा ही में डूबा बाल गंगाधर तिलक ॥
गाते २ कृष्ण गीता बाल गंगा धर तिलक ।
सोगये फिर कर के टीका बाल गंगा धर तिलक ॥
देख कर स्वर्गी नज़ारा बाल गंगाधर तिलक ।
होगये महवे तमाशा बाल गंगाधर तिलक ॥
है दुखी तेरी रियाया बाल गंगाधर तिलक ।
पढ़ती है ग़म का फ़साना बाल गंगाधर तिलक ॥

अल्लाह ने चाहा तो स्वराज मिलेगा

गांधी तेरा आना हमें पैग़ाम बका है,
मुर्दों को तू करदेता है ज़िन्दा यह सुना है ॥
ऐ मेरे मसीहा तेरा दीदार दवा है ।
दर्शन तेरा ऐ हाज़िके रूहानी शिफा है ॥

क्यों ओ गधे स्वराज की तुझ को फिकर नहीं

कल एक गधे से कर दिया मैंने यों ही सवाल ।
क्यों ओ गधे स्वराज्य का तुझ को फिकर नहीं।
सुनकर गधे ने यह कहा मुंह को ज़रा संभाल ।
करता तू अपनी कौम का बिल्कुल ज़िकर नहीं॥
अपने को छोड़ गैर के जो जाँ निसार है ।
हजरत ! गधे से बढ़ कर है कौमी गद्दार है॥

आज़ाद होने का वक्त है

अपनी हिम्मत से बढ़ो क्या शोर है हमदाद का ।
मुन्तज़र हम से रहा जाता नहीं मीयाद का॥
ऐ असीराने कफ़स यह वक्त है इमदाद का
सुनते हैं गुलचीं से झगडा छिडगया सय्याद का,
देके आजादी का लासा कर लिया मुझको असीर ।
पूछते हैं हाल क्या उस बुल बुले नाशाद का॥
आओ मिल कर सब कफ़स की तोड़ डालें तीलियां।
जुल्म अब हमसे सहा जाता नहीं सय्याद का॥

तिलक

भाई बहिनों का भ्राता, लाल गंगाधर तिलक ।
मादरे मुशफ़क़ का प्यारा लाल गंगाधर तिलक ॥

मुल्क का रोशन सितारा बालगंगाधर तिलक ।
हिन्द की आंखों का तारा बाल गंगाधर तिलक ॥
छोड़ कर हम को अकेला बाल गंगाधर तिलक ।
चल दिया उसनको तनहा बालगंगाधर तिलक ॥
बेनाथाओं का सहारा बाल गंगाधार तिलक ।
बेकसीओं का वसीला बाल गंगाधर तिलक ॥
लुत्फ और रहमत का चश्मा बालगंगाधर तिलक ।
प्रेम और उलफत का दरिया बाल गंगाधर तिलक ॥
आब गंगा का था दरोमा बाल गंगाधर तिलक ॥
आब गंगा ही में डूबा बाल गंगाधर तिलक ॥
गाते २ कृष्ण गीता बाल गंगा धर तिलक ।
सोगये फिर करके टीका बाल गंगा धर तिलक ॥
देख कर स्वर्गी नजारा बाल गंगाधर तिलक ।
होगये महवे तमाशा बाल गंगाधर तिलक ॥
है दुखी तेरी रियाया बाल गंगाधर तिलक ।
पढ़ती है गम का फसाना बालगंगाधर तिलक ॥

अल्लाह ने चाहा तो स्वराज मिलेगा

गांधी तेरा आना हमें पैग़ाम बक़ा है
मुर्दों को तू करदेता है जिन्दा यह सुना है ॥
ऐ मेरे मसीहा तेरा दीदार दवा है ।
दर्शन तेरा ऐ हाजिके महानी शिफ़ा है ॥

औतार स्वराज्य रहमत के फिरिश्ते।
हैं पास तेरे हिन्द की किस्मत के नविश्ते॥
या डियूक की आमद से गो मातम का नजारा।
लेकिन तेरे इकबाल का रोशन है सितारा॥
करता है जिधर हिन्द में जाने का इशारा।
कदमों को तेरे चूमती है शोकने दारा॥
इस तेरी फकीरी से लरजते हैं शाहशाह।
यौरूप में तेरे नाम से पैदा है तहल्का॥
हम खिरमने हस्ती में हैं आतिश का शरारा।
ठन्डा किये रहता है उसे हुक्म तुम्हारा॥
वरना हमें जीना नहीं ज़िल्लत का गवारा।
लो हम को छुडा कैद गुलामी से खुदा रा॥
ये हिन्द मुझे तेरी ही इज्जत की कसम है।
ऐ शाह हिमालय तेरा रफअत की कसम है॥
डायर तेरी बेदाद को वहशत कसम है।
इस जाबरो ज़ालिम का हुकूमत की कसम है॥
हम चाल चलें ऐसी की आदा को हो सकता।
हो अदम तआवुन से ही दिल का उन का शिकस्ता॥
न तोप न बन्दूक न हो फौज का दस्ता।
लें आप ही वह हिन्द से इंगलैंड का रस्ता॥
इसी तौर से ही तख्त हमें ताज मिलेगा।

अल्लाह ने चाहा तो स्वराज्य मिलेगा ॥

है सियासत की .फुज़ा पर गोरी और काली पतंग

दिल में जो उलफत है गांधी की यह हो कथ ओर से।
शाह हो या प्रिंस हो या डियूक कनाट हो ॥
नौरतन-ज़िन्दा हों और फिर अकबरी दरबार हो।
हो इधर कुरआन गीता का उधर से पाठ हो ॥
मालवी, दोनों अली, आज़ाद हों, नेहरू यो लाल।
जफर व किचलू हों गवर्नर उनपर गांधी लाट हो ॥
है सियासत की फुज़ा गोरी और काली पतंग।
गोरा गोरे मुल्क में जाकर गिरे यह काट हो ॥
टेम्स आफ लन्दन के मन्ज़र आपजा कर देखिये।
हमको यह गंगा हमारी और इनका घाट हो ॥
याद रक्खो अब मुनाफिक की नहीं गलने की दाल।
धोबी का कुत्ता है वह उसका न घर न घाट हो ॥
चाहते हो गर कि अब स्वराज हासिल हो हमें।
मदद कीजे कामयाब अपना यह बाईकाट हो ॥
छोड़दो फौरन उम भड़क मिश्री विदेशी पैरहन।
पैरहन खद्दर की हो बिस्तर को ऐसी टाट हो ॥
कौम के गद्दार सब वक्फे खुशामद होगये।
इनका माथा और गोटे रंग की चोखट हो ॥

कलाम जौहर

(मौलाना मोहम्मदअली साहिब की वह नज्म जो नज़रबन्दी के समय आपने लिखी थी।)

हर रंग में राज़ी बरज़ा हो तो मज़ा देख।
  दुनियां ही में बैठे हुये जन्नत की फ़ज़ा देख॥
है सन्नते अरबाबे वफ़ा सब्रो तवक्कुल।
  छोटे न कहीं हाथ से दामाने खुदा देख॥
डरते रहे गुरबत में अकेला तो नहीं तू।
  बतहा के मुहाजिर को भी नक्शे कफ़े पा देख॥
तू तीर अबाबील से हरगिज़ नहीं कम ज़ोर।
  बेचारगी पर अपनी न जाने खुदा देख॥
इस तरह के जीने में भी मरने का मज़ा है।
  किस्मत में यही है कि अभी राहे फ़ना देख॥
अल्लाह के बांकों का भी है रंग निराला।
  इस सादगी पर शोखिये खूने शहदा देख॥
यह नूर खुदा का है बुझाये न बुझेगा।
  कुछ दम है अगर तुझमें तो आ तू भी बुझा देख॥
समझा भी है कुछ तो कि यह है किससे तमर्रुद।
  अल्लाह को मान अपनी हकीकत को ज़रा देख॥
हो लाख नज़र बन्द हुआ बन्द नहीं है।

अल्लाह के बन्दों को न इस दर्जा सता देख ॥
वो हुस्न तलब लाख मगर कुछ नहीं मिलता ।
हो सिदक़े तलबे फिर असर आहरसा देख ॥
तू तेरी यों रोशा मेरा पैमाँ है अजल का ।
पाबन्द जफा तू है तो मेरी भी वफ़ा देख ॥
नक्शा तो कहीं था नहीं दुनियाँ का भी कुछ ठीक ।
इस काफ़िरे के फ़ैज़ से दिल तू भी लगा देख ॥
सोने का नहीं वक्त यह होशियार हो गाफ़िल ।
रगे फलक पीर जमाने की हवा देख ॥

महात्मा गांधी की बन्सरी ।

गांधी ने सत्याग्रह की क्या बन्सरी बजाई ।
धुन में मगन हो इसकी अपनी खुदी भुलाई ॥
सोने से ख़ाक पहिले करते हैं ख़ाक होजा ।
ऐ मुश्त ख़ाक वरना क्या ख़ाक है बड़ाई ॥
किश्ते अमल का अपनी दे आब आनो तन का ।
सर सब्ज़ हिन्द होगा वरना है सब दिहाई ॥
हस्ती मिटा दे अपनी बहरे वतन जो दाना ।
वह दन से देख कसरत करती है रहनुमाई ॥
अपनी मदद करो तुम अपने ही पाँव पर हो ।
माँगे कभी किसी ने आज़ादी भी है पाई ॥
देशी खुराक खाना देशी पोशाक पहिनो ।

देशी हो तर्ज सादा देशी रहे कमाई ॥
बदकिस्मती से इक से दो तीन हो गये थे ।
फिर एक हो रहे हैं वह बनसरी बजाई ॥
भारत को जान माता सब पूजने लगे हैं ।
हिन्दू अछूत, मुस्लिम, सिख, जैनी औ ईसाई ॥
पड़ते गले जो कल थे मिलते गले हैं बाहम ।
दिल से मिटा तआस्सुब त्यों एकता सिखाई ॥
आवे वफा से ही यह फूले चमन हमारा ।
नगमा सरा हो बुलबुल गुलपर यों पा रिहाई ॥
शाबाश आफरीं है गांधी महात्मा को ।
बन्सी बजा के जिसने आजादी है दिलाई ॥
ऐ कृष्ण रूप गांधी तू लाज रख वतन को ।
भारत है द्रौपदी बन तेरी शरण में आई ॥
बन्सी मलिक अशा से एक बार फिर बजा के
गौवों को तू बचाले हैं मारते कसाई ॥

देशभक्त लाला लाजपत राय जी
का
स्वागत ।

हो मुबारक कौम के सरताज आये हैं ।
कि लाला लाजपतराय वतन में आज आये हैं ॥
हिन्द की मगरिब में रखकर लाज आये हैं ।

नई सौगात लेकर रह बरें सौगात आये हैं ॥
मुबारक याद अमरीका से भारतवर्ष पर आये ।
तरक्की करते २ फर्श से हैं अर्श पर आये ॥
खिलाये हैं गुले मकसूद खारस्तान गुरबत में ।
खटकते हो रहे बन बन के कांटा चश्मे हैरत में ॥
जहां तक हो सका कोई कसर छोड़ी न मेहनत में ।
शुजाअत के कदम आगे रहे मैदान हिकमत में ॥
ज़बां शमशेर थी दिल कर लिये तसखीर गैरों के ।
कि उनके सामने चलने न पाये तीर दुश्मनों के ॥
वतन के फायदे के वास्ते गैरों से की यारी ।
कि मकसद आपका था हिन्दवासों की तरफ़दारी ॥
बयां करदी मरीज़े कौम को जो जो थी बीमारी ।
कि दौलत पकट से जां पर बनी है ज़ख्म है कारी ॥
असीरे गम गिरिफ्तारे बला आफत के मारे हैं ।
सिसक कर उमर काटी है तड़प कर दिन गुज़ारे हैं ॥
गर्ज़ जो हाल था हिन्दूस्तां का कह दिया सारा ।
बजाया ज़ोर से फरियाद का आलम में नक्कारा ॥
हक़ीक़त में तूही भारत के है इक बाल का तारा ।
पुकार उठा ज़माना लाजपतराय की जय कारा ॥
मोहब्बे कौम है शोहरा है तेरी पाक बाज़ी का ।
तेरा सर सहरा है हिन्दूस्तां की सर फराज़ी का ॥

यों ही करता रहा आज़ादियों की आरज़ू बर्षों ।
वतन तक में भी छानी खाक तूने कूबकू बर्षों ॥
न आया बे वतन होकर हमारे रू बरू बर्षों ॥
तेरी आंखों से ग़ुरबत में रहा जारी लहू बर्षों ॥
ग़ज़ब का सोज़ लेकिन भर दिया क़ौमी तराने में ।
बहार आई है बुलबुल आ गया फिर आशियाने में ॥
इधर आ तू तेरे कपड़ों से झाड़े गर्द कुलफ़त को ।
नया तुर्रा लगादें आज तेरी शानोशौकत को ॥
हैं निकालेंगे तेरे तलवों से खारे दश्ते ग़ुरबत को ।
तेरी जब तक जियेंगे याद रक्खेंगे इनायत को ॥
तेरी ईसार नफ़सी पर 'ख़लीके' ज़ार कुर्बां है ।
हमारा मेहरबां है तू हमारा राहते जां है ॥

कारवाने सिद्क के सालार हैं शौकत अली

शाहिदे ईमान का सिंगार हैं शौकत अली ।
कुलजमे हक़ के दरे शाहवार हैं शौकत अली ॥
पास आ आकर पलट जाये न किस तरह अजल ।
मुसलिमे बीमार के गमख्वार हैं शौकत अली ॥
क्यों तसल्ली अपना मतवाला बनाये किस तरह ।
बादये तौहीद से सरशार हैं शौकत अली ॥
दूर कब्बुल से है हुमायां रुये वहदत का झलक ।

अन्दलीबे ख़िल्द की मिन्कार हैं शौकत अली ॥
अब नीसां पानी पानी हो गया है शर्म से।
इस तरह मजलिसमें गौहर बार हैं शौकत अली ॥
ताकि इस बद अहद को ले आयें राहे रास्त पर।
कारवाने सिद्क के सरदार हैं शौकत अली ॥
अब कमेटी मरकज़ी के दुश्मन से पैकार में है।
वर्से शाहे हिन्द में पैकार हैं शौकत अली ॥
आशिमे काबा हैं और हैं तरजमाने मुस्तफ़ा।
शाहे दो आलम के ख़िदमत गार हैं शौकत अली ॥
दस्तहाने राह में न हों क्यों शौकतो रफ़अत निसार।
जैश अहमद के अलम बरदार हैं शौकत अली ॥
ख़ाक पाये मुस्तफ़ा होकर हुआ पाया बलन्द।
सर फ़राज़ो सरवरो सरदार हैं शौकत अली ॥
बुलबुलों को अब कफ़स का ख़ौफ़ क्या होवे नज़ीर।
नासिरे दीं हामिये शहरार हैं शौकत अली ॥

बोलती हुई मूरती

(नागपुर कांग्रेस के स्टेज पर महात्मा तिलक की मूरती का ख़ामोश लेक्चर)

हिन्द के सपूतो, ऐ कांग्रेस वालो !
ऐ मेरे भाई बन्धो ! ऐ मेरे देश वालो !

गो जिस्म से किया है मैंने अदम तआवुन।
है रूह को अभी तक स्वराज को वही धुन॥
मुमकिन नहीं कि देखो तुम मुझको चश्म सर से।
देता हूं मैं दिखाई अब रूह की नजर से॥
मौजूद रूह मेरा इस जल्सा गाह में है।
जल्सा मेरा तुम्हारी सब की निगाह में है॥
हां मैं वही तिलक हूं चरचा है आम जिसका।
माथे पे हिन्दूओ के तिखा है नाम जिसका॥
स्टेज पर तुम्हारे गरजा हूं उमर भर मैं।
देता हूं आज तुमको खामोश लेकचर मैं॥
ऐ राग गाने वालो आज़ादिये वतन का।
कब तक पढ़ोगे नौहा बरबादिये वतन का॥
हर कौम आचुकी है जोलांगाह अमल में।
यह वक्त है अमल का दौड़ो रहे अमल में॥
बातों से कुछ न होगा छोड़ो ज़बां दराज़ी।
फेंको अमल का पासा जी तो अमल की बाजी॥
तुम लाख भी बजावो फरियाद की नफीरी।
मुमकिन नहीं कि बदले कानून सख्त गीरी॥
छुपकाम कर चुके हैं रहमो करम से तोबा।
हर एक हट धर्म ने करली धर्म से तोबा॥
बरखास्त होचुकी है इंसाफ की अदालत।
करता नहीं है कोई मजलूम की बकालत
कबतक यह शोर शेवन कब तक यह आहो

आसान यों न होगी यह मुश्किल तुम्हारी ॥
स्वराज से तुम अपने मक़सद को पासकोगे।
स्वराज ही से अपनी बिगड़ी बना सकोगे॥
स्वराज से तुम्हारा दुख दर्द दूर होगा।
स्वराज तुमको हासिल होगा ज़रूर होगा॥
बांधो कमर का उठो स्वराज लेके छोड़ो।
मुमकिन हो आज लेना तो आज लेके छोड़ो॥

बेताज हिन्द का है तू ताजदार गांधी !

ए सदै रवां भारत पे गम गुसार गांधी !
ए नौ निहाले भारत ए जांनिसार गांधी॥
अपने आराम दुख की परवाह नहीं है तुझको।
भारत के दुख से है तू सीना फिगार गांधी॥
तेरा है दम ग़नीमत तेरा क़दम मुबारक।
ऐ मादरे वतन के खिदमत गुज़ार गांधी॥
ए शान्ती की मूरत पैग़म्बरे आज़ादी।
सत्याग्रह के बानी सत्य के औतार गांधी॥
सोज़े वतन की तूने वह बांसरी बजाई।
बेदार कर दिये सब नर और नार गांधी॥
बुये वतन की हर सू फैलाई है सुगन्धी।
है इस्म बा मुसम्मा भारत सिंगार गांधी॥

तूने हमें सिखाया सबके अहम तआवुन ।
तूही करेगा भारत की नाव पार गांधी ॥
तेरे ही सिर पे सेहरा भारत स्वराज का है ।
उस दिन का कर रहे हैं हम इन्तजार गांधी ॥
भारत का बच्चा २ गुन तेरा गा रहा है ।
और मुन्तज़र है तेरा मुल्को दियार गांधी ॥
साल आध साल किस का कल को स्वराज लेलें ।
भारत में, और भी हों गर पांच चार गांधी ॥
पहिले तो लोग दुख में करते थे याद मां को ।
अब निकलता है मुंह से बे अख़्त्यार गांधी ।
उजड़े हुये चमन का इक पासबान तू है ।
बे ताज हिन्द का है तू ताज दार गांधी ॥
जसवंत सिंह के लब पे हर दम यही दुआ है ।
भारत में होवें पैदा अब बेशुमार गांधी ॥

हिन्दुस्तान की उम्मीद माहात्मा गाँधी

वह कौन जलवा फ़िग्न है ? महात्मा गांधी ।
वह कौन फ़ख़रे ज़मन है ? महात्मा गांधी ॥
वह कौन सोख्ता तन है ? महात्मा गांधी ।
वह कौन जाने वतन है ? महात्मा गांधी ॥
अब इनके आने की देहली में बन्दगी न रहीं ।

असर कहाँ थी दिलों में जो कारिशें न रहीं ॥
वह वह हैं कौम पे तन मन मिटाये बैठे हैं ।
मकाये मुल्क है धूनी रमाये बैठे हैं ॥
वतन परस्तों पे ईमान लाये बैठे हैं ।
धनी हैं बात के आसन जमाये बैठे हैं ॥
वह करके रहते हैं जो दिल में ठान लेते हैं ।
यह वह हैं नाम पे भारत के जान देते हैं ॥
मुहब्बे कौम हैं अहले वतन के प्यारे हैं ।
यह चश्मे मादरे हिन्दुस्तां के तारे हैं ॥
यह वह हैं खाक नशीनों के जो सहारे हैं ।
हज़ार जान से हमदर्द यह हमारे हैं ॥
यही हैं माय पे सद नाज़ हिन्दियों के लिये ।
यही हैं कौम के दम लाज हिन्दियों के लिये ॥

तू मुरको कौम का है दर्द आशना गांधी

दिलों में घर है तो आंखों में तेरी जा गांधी ।
तू मुरको कौम का है दर्द आशना गांधी ॥
यह दिल में बैठती है दिल से जो निकलती है ।
न किस तरह हो मोअस्सर तेरी सदा गांधी ॥
अमूद से है भरी कारगाहे इल्म तेरी ।
कि जो अमल है तेरा है वह बे रया गांधी ॥

तूने हमें सिखाया सबके अदम तआवुन ।
तूही करेगा भारत की नाव पार गांधी ॥
तेरे ही सिर पे सेहरा भारत स्वराज का है ।
बस दिन का कर रहे है हम इन्तज़ार गांधी ॥
भारत का बच्चा २ गुन तेरा गा रहा है ।
और मुन्तज़र है तेरा मुल्को दियार गांधी ॥
साल आध साल किस का कल को स्वराज लेलें ।
भारत में, और भी हों गर पाच चार गांधी ॥
पहिले तो लोग दुख में करते थे याद मांको ।
अब निकलता है मुंह से बे अख़्तयार गांधी ॥
उजड़े हुये चमन का इक पासबान तू है ।
बे ताज हिन्द का है तू ताज दार गांधी ॥
बलवंत सिंह के लब पे हर दम यही दुआ है ।
भारत में होवें पैदा अब बेशुमार गांधी ॥

हिन्दुस्तान की उम्मीद माहात्मा गाँधी

यह कौन जल्वा फिगन है ? महात्मा गांधी
यह कौन फखरे अमन है ? महात्मा गांधी ॥
यह कौन सोख्ता तन है ? महात्मा गांधी ।
यह कौन जाने वतन है ? महात्मा गांधी ॥
अब इनके आने की देहली में धूमधाम न रहीं ।

किस तरह भूलू इसे मैं जबकि किचमन में मेरी।
लिख चुका है रांकमे तहरीर वन्देमातरम् ॥
फिक्र क्या जल्लाद ने जब कत्ल पर बांधी कमर।
रोक देगा दूर से शमशेर वन्देमातरम् ॥
जुल्म से गर कर दिया खामोश मुझको रखना।
बोल उठेगी मेरी तस्वीर वन्देमातरम् ॥
सर जमीं इगलैन्ड की हिल जायेगी दो रोज में।
गर दिखायेगा कभी तासीर वन्देमातरम् ॥
सन्तरी भी मुजतरब थे जब कि हर झन्कार में।
बोलती थी जेल में जन्जीर वन्देमातरम् ॥

गीत भारत के भला गायें तो गाये क्योंकर

कष्ट भारत के मिटाये तो मिटाये क्योंकर।
दर्द दिल अपना सुनाये तो सुनाये क्योंकर ॥
बचाये खरगोश में सोते हैं नहीं कुछ सुध बुध।
अहले भारत को जगाये तो जगाये क्योंकर ॥
मगरबी चमश्ने चौंधिया दी है आँखें सब की।
नक्शा भारत का दिखाये तो दिखाये क्योंकर ॥

तेरा ख्याल है पाक और कौन है बेलोम।
तेरा जमीर है बेगाना अना गाँधी॥
दिया है हिन्द को तूने ईसार का सबक तून।
है बाल बाल तेरा कौम पर फिदा गांधी॥
जो कह के हक तू रहा कैद भी तो रंज नहीं।
कफस में रहते हैं मुरगाने खुशनवा गाँधी॥
जमाना क्या न तेरे हुक्म की करे तामील।
कि मानता नहीं तू नफस का कहा गाँधी॥
सुना है नक्शे निगार जहां से नक्शे हमीर।
बरी है बुये रिया से यह बोरिया गांधी॥
शमीम खल्क मको से जहां मोअत्तर है।
सद आफरीं है तुझे ऐ महात्मा गांधी॥
सपूत तुझ से करें मादरे वतन पैदा।
यही है फैजकी सुबहो शाम दुआ गांधी॥

वन्दे मात्रम्

कौम के खादिम को है जागीर बन्देमात्रम्।
है वतन के वास्ते अकसीर बन्देमात्रम्॥
हाकिमों को है इधर बन्दूक पर अपनी गरूर।
हैं इधर हम बेकसों के तीर बन्देमात्रम्॥
कत्ल कर हम को न ए कातिल हमारे खून से।
तेग पर हो जायगा तहरीर बन्देमात्रम्॥

किस तरह भूलूं इसे मैं जबकि किपमन में मेरी ।
लिख चुका है रांकिमे तहरीर वन्देमातरम् ॥
फिक्र क्या जल्लाद ने जब कत्ल पर बांधी कमर ।
रोक देगी दूर से शमशेर वन्देमातरम् ॥
जुल्म से गर कर दिया खामोश मुझको एखना ।
बोल उठेगी मेरी तस्वीर वन्देमातरम् ॥
सर जमीं इंगलेन्ड को हिल जायेगी दो रोज में ।
गर दिखायेगा कभी तासीर वन्देमातरम् ॥
सन्तरी भी मुजतरब थे जब कि हर झन्कार में ।
बोलती थी जेल में जन्जीर वन्देमातरम् ॥

गीत भारत के भला गाये तो गाये क्योंकर

कष्ट भारत के मिटाये तो मिटाये क्योंकर ।
दर्दे दिल अपना सुनाये तो सुनाये क्योंकर ॥
ख्वाबे खरगोश में सोते हैं नहीं कुछ सुध बुध ।
अहले भारत को जगाये तो जगाये क्योंकर ॥
मगरबी चमकने चौंधिया दी हैं आँखें सब की ।
नक्शा भारत का दिखाये तो दिखाये क्योंकर ॥
आप कंगाल हुये औरों के घर भर भर कर ।
इनको गैरत भी दिलाये तो दिलाये क्योंकर ॥
किसी ने ऐसा सुलाया है कोरा फारम ।

होश में इनको गर आयें तो आयें क्योंकर॥
रोब साहिब है कोई खान बहादुर कोई।
इन से हम आंख मिलायें तो मिलायें क्योंकर॥
अपने भाइयों के गले काट लेने है खताब।
इनकी आदत यह हटायें तो हटायें क्योंकर॥
दर्दे भारत का नहीं जिनके दिलों में मुतलक।
इनको स्वराज दिलायें तो दिलायें क्योंकर॥
इन्हें कुछ खबर नहीं दुनिया व माफीहा की।
रात दिन मग्ज खपायें तो खपायें क्योंकर॥
मादरे वतन का गम खा गया हमको बिलकुल।
इसका हमगम भी अगर खायें तो खायें क्योंकर॥
एक कतरा भी नहीं पानी का आंखों में रहा।
रंज के आंसू बहायें तो बहायें क्योंकर॥
हम को रोने भी नहीं देती है सी० आई० डी०।
गीत भारत के भला गायें तो गायें क्योंकर॥
दिल में तो बहुत हैं यशवन्तसिंह उठती लहरें।
पर जबां अपनी हिलायें तो हिलायें क्योंकर॥

भारत माता से खिताब

ऐ भारत बतादे मुझको कि इतनी सोगवार क्यों
किस बात का है तुझ को तू इस कदर बेकरार

हुई क्यों इतनी आजुर्दा खातिर पहुँचाया किसने बहु रंज तुझको।
हों जिसके पच्चीस करोड़ बेटे फिर उसको इतना आजार क्यों है॥
क्यों मुँहपे छाई है इतनी जरदी जिस्म बिना हड्डियों का ढांचा।
कहां गयीं रगें आब्रुवानी यह मौत कासा आसार क्यों है॥
न खून का अब बदन में तेरे दिखाई देता है एक कतरा।
घुसीहुई दोनों आंख अन्दर यह दमबदम का शुमार क्यों है?
बदन में राशा जबां में लोकनत हलक में कांटे पड़े हुये हैं।
न तनपे कपड़ा न मुँह में लुकमा तू जिन्दगी से बेजार क्यों है?
शिरोमणि थी तू कुल जहांकी जमाना भर की थी अन्नदाता।
करोड़ों पाले यतीम तूने खुद आज इतनी लाचार क्यों है॥
जन्म के भूके सदा के नंगे जो दाने २ को तरसते थे।
किया उन्हें भी निहालतूने मगर तू अब खुदाई खवार क्यों है?
प्राण थी अन्न, पूर्णा तू हुई, पे देवी दयाल जिस पर॥
बनाये बिगड़े हुये करोड़ों बला में गिरफ्तार क्यों है?
वही जमीं और आस्मां है वही है सूरज व चांद तारे।
वही हवा और वही है पानी तो सिरपे फिर गमसवार क्यों है?
वजह नहीं कुछ समझ में आती क्यों रोरही जार इतना।
न समझा 'यशवतंसिंह' कि तूने उतारा अपना सिंगार क्यों है!

भारत माता का जवाब

ए राहरो तू राह से अपनी न पूछ कि मेरा हाल क्या है।

रहेगा हिन्द में उठता यह मातम का धुआं कबतक ॥
बहुत मैं होचुकी बरबाद निगरानी में गैरों की।
न जाने यह रहेंगे और मेरे पासबां कब तक ॥
तरक्की और नज्जुल को सुना है दौर होता है।
नहीं मालूम आयेगा वह पहिला सा समां कब तक ॥
अगर कानून घरका है तो खुदाई तो नहीं घर की।
रहोगे उस शहों के शाह से तुम सरकशां कब तक ॥
बहुत रोये बहुत पीटे नकुछ मतलब हुआ हासिल।
रहोगे इस तरह यशवंत सिंह नाला कुनां कब तक ॥

आज़ाद हिन्द

होंगे जरूर अबतो आज़ाद हिन्द वाले।
मुद्दत से कर रहे हैं फरियाद हिन्द वाले ॥
वक्त बुरे दिनों का अब बीत जा चुका है।
होंगे न आहे जरसे बरबाद हिन्द वाले ॥
मालूम होरहा है आसार नेक दिन का।
खुब शाद होरहे हैं नाशाद हिन्द वाले ॥
सब इन्तजाम अपना हम आप देखलेंगे।
इस तौर कर रहेहैं इरशाद हिन्दवाले ॥
वह होंगे होमरूलर अब होमरूल होगा।
होंगे नये, सिरे से आज़ाद हिन्द वाले ॥

इति